

भगवान् ऋषभदेव के पुत्र, गोम्मटेश बाहुबली (अंतर्राष्ट्रीय पाठकों के लिए)

Bhagwan Shri Rishabh Dev's Son, Gommatesh Bahubali (A Monograph for International Readers)

Author

Dr. Chakravarthi Nainar Devakumar

M.Sc., Ph.D., ARS, FNAAS

Former Assistant Director General, Indian Council of Agricultural Research

Mob. 8010509335; cdevakumar@gmail.com

Editors

Prof. M.L. Jain

MA, M. Phil.

Retd. Head of Dept., PGDAV College,

Delhi University

Mob. 9213985270

Dr. R.K. Jain

(Ex. Vice Principal)

Sri Venkateswara College (Delhi University)

Mob. 8860297854

Publishers

Arinjaya Jain & Tathagat Jain

F-3, Green Park, New Delhi, Mob. 9969143948; arinjaya@gmail.com

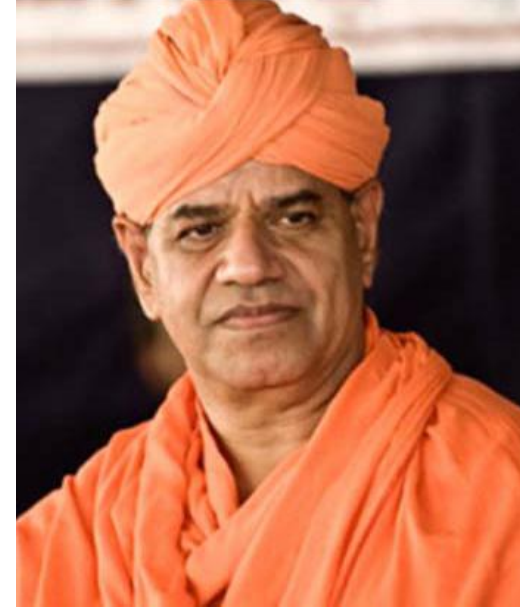
© Dr. Chakravarthi Nainar Devakumar (2018)

Title of Book	: Bhagwan Shri Rishabh Dev's Son, Gommatesh Bahubali: (<i>A Monograph for International Readers</i>) भगवान् ऋषभदेव के पुत्र, गोम्मटेश बाहुबली (<i>अंतर्राष्ट्रीय पाठकों के लिए</i>)
Author	: Dr. Chakravarthi Nainar Devakumar
Editors	: Prof. M.L. Jain and Dr. R.K. Jain
Holder of the Copyrights	: Dr. Chakravarthi Nainar Devakumar
Publishers	: Sarvashri Arinjaya Jain & Tathagat Jain F-3, Green Park, New Delhi 110016
Year of Publication	: 2018
Place of Publication	: New Delhi
Edition	: Digilot; First
Copies	: 1000
Price	: Rs. 100
Language	: English & Hindi
Address for print copies	: Sarvashri Arinjaya Jain & Tathagat Jain F-3, Green Park, New Delhi 110016

The Two Architects of Millennium Mahamastakabhishek
सहस्राब्दी महामस्तकाभिषेक के दो महान् आयोजक



प. पूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यश्री 108 विद्यानंद जी
Param Pujya Rashtrasant
Acharya Shri 108 Vidyanand Ji



पूज्य जगद्गुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति
भट्टारक स्वामीजी, श्रवणबेलगोला
His Holiness Jagadguru Karmayogi Swastisree
Charukeerti Bhattaraka Swamiji,
Shravanbelgola

Content	Page No.	विषयसूची
Foreword	1	प्रस्तावना
Bhagwan Rishabh Dev	5	भगवान् ऋषभदेव
Teachings of Prince Rishabh Dev	6	राजा ऋषभदेव की शिक्षाएँ
Bharat & Bahubali	9	भरत और बाहुबली
Mahamuni Bahubali's Supreme Penance	15	महामुनि बाहुबली की महान् तपस्या
The last SrutKevali Bhadrabahu	17	अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु
The Story of Chandragupta Maurya	18	चन्द्रगुप्त मौर्य की कहानी
Shravanbelgola	20	श्रवणबेलगोला
Chavundaraya	21	चामुण्डराय
The Dream that Came True: Making of the Grand Statue	22	एक सपना जो सच हुआ : भगवान् बाहुबली की विशाल प्रतिमा का निर्माण
Story of Sculptor-Chagad	23	शिल्पकार चागत की कहानी
Tyagada Brahmadeva Pillar	24	त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ
Vindhyagiri & Chandragiri	25	विन्ध्यगिरि एवं चन्द्रगिरि
The Immortal Story of Gullikayi Ajji	26	गुल्लिकायी अज्जि की अमर कहानी
Other Statues of Bahubali	28	बाहुबली की अन्य मूर्तियाँ
The Famous Ladies Connected with Bahubali	30	बाहुबली और उनकी प्रतिमा की प्रतिष्ठा से जुड़ी हुई कुछ प्रसिद्ध महिलाएं
Various Versions of Bhagwan Bahubali Story	31	भ. बाहुबली की कहानी के विभिन्न रूप
Gommata and Other Names of Bahubali	31	गोम्मट और बाहुबली के अन्य नाम
Lessons from Bharat-Bahubali Story	32	भरत और बाहुबली की कहानी से शिक्षाएँ
Resources	33	संदर्भ सूची
Hymns on Bhagwan Bahubali	34	श्री बाहुबली स्तोत्रं
How to reach Shravanbelgola?	36	श्रवणबेलगोला कैसे पहुँचें?

FOREWORD

Gommatasangaha sutam Gommata siharuvari GommataJinO ya |

GommatarAya viNimmiya dakkhiNa kukkuda JiNO jayatu ||

(Gommatasara, Karma kand Gatha No. 968, Acharyasri Nemichandra
Siddhant Chakravarti)

Bhagwan Shri Neminath, the Gommatajina whose idol was installed at Chandragiri by Gommataraya and the southern Lord of serpents viz, Bhagwan Bahubali whose magnificent statue at Vindhyagiri is adored. We invoke them for the success of this book.

This mini-book on Bhagwan Bahubali being brought out to commemorate the forthcoming 88th Mahamastakabhishek of Bhagwan Gommatesh Bahubali in February 2018 in Shravanbelgola, Karnataka also captures the glimpses of glorious past of our country. Our country, Bharat or Bharatvarsha derives its name from the legendary Emperor Bharat. Bhagwan Adinath, the father of Bharat and Bahubali, has been the architect of human civilization. He not only organized the modern concept of human society, he introduced six branches of economic activities viz agriculture, education, art & craft, defence, commerce and engineering. His contributions to human civilization are too elaborate to be covered in any single book. No wonder, the Hindu scriptures and puranas contain hymns in praise of him.

प्रस्तावना

गोम्मटसंगहसुत्तं, गोम्मटसिहरुवरि गोम्मटजिणो य ।

गोम्मटरायविणिम्मियदक्खिणकुकुडजिणो जयदु ॥९६८॥

(आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित् गोम्मटसार कर्म काण्ड से)

भगवान् श्री नेमिनाथ जी जिन्हें गोम्मट जिन कहते हैं तथा भगवान् बाहुबली जी जिन्हें दक्षिण नाग्राज् या कुक्कुड जिन् कहते हैं. उनकी मूर्तियों को गोम्मटराय जी ने क्रमशः चन्द्रगिरि तथा विन्द्यगिरि में बनवाया. इस पुस्तक की सफलता के लिए हम उनकी वन्दना करते हैं

भगवान् बाहुबली के सम्बन्ध में यह विशेष पुस्तिका कर्नाटक राज्य के श्रवणबेलगोला में स्थित उनकी विशाल प्रतिमा के 88वें महामस्तकाभिषेक के स्मरणार्थ प्रस्तुत की जा रही है जो आगामी फरवरी 2018 में सम्पन्न होगा। यह हमारे देश के गौरवशाली अतीत की भी कुछ झांकियां चित्रित करती है। हमारे देश भारत या भारतवर्ष को अपना यह नाम पौराणिक युग के महान् सम्राट भरत से प्राप्त हुआ है। भरत और बाहुबली के पिता भगवान् आदिनाथ ऋषभदेव मानव सभ्यता के महान् शिल्पकार रहे हैं। उन्होंने न केवल मानव समाज की आधुनिक परिकल्पना को संगठित किया बल्कि आर्थिक गतिविधियों की छः शाखाओं का भी निर्धारण किया – कृषि, शिक्षा, कला एवं शिल्प, रक्षा, वाणिज्य और यंत्रकला। मानव सभ्यता के विकास में उनका योगदान इतना व्यापक है कि उसे किसी एक पुस्तक में समेट पाना संभव नहीं है। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि हिन्दू शास्त्रों और पुराणों में उनकी प्रशंसा में अनेकानेक स्तुतियां प्रस्तुत की गई हैं।

The contributions of his two daughters, Brahmi and Sundari, in the field of scriptology and mathematics are legendary. Emperor Bharat is credited with the developments of administration, governance and social order. The authorship of Gayatri mantra and many types of puja is credited to him.

Bhagwan Bahubali (not to be confused with the film title) is remembered primarily for three reasons:

First, he was the first votary of freedom of expression in the human history. He went to the extent of waging a war against his own elder brother whom he respected. We are happy that our Constitution enshrines and protects our freedom of expression and privacy to life.

Second, he was the first karmayogi who sacrificed the fruits of victory and renounced the world. Third, he was the first model Saint to undertake the hardest form of penance.

The Bharat-Bahubali conflict resolution without bloodshed is an apt example of applications of Ahimsa and Anekantvad in daily life and bilateral relationship.

Was the decision of the council of ministers as wise as was thought of? Can any dispute between two kings be settled through individual bouts? Notwithstanding the causality of lives, what would have happened if both the armies were involved in the war? Surely, the emperor Bharat would have won the battle given the huge army he had amassed. In the human history this kind of dispute settlement was never repeated.

आदिनाथ जी की दो पुत्रियों, ब्राह्मी और सुनन्दा का लिपि-विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान रहा है। सम्राट् भरत को शासन-प्रबन्ध, राज्य-संचालन और समाज-व्यवस्था के विकास का श्रेय दिया जाता है। गायत्री मन्त्र की संरचना और अनेक प्रकार की पूजा पद्धतियों के विधान का गौरव भी उन्हें ही प्राप्त है।

भगवान् बाहुबली (बाहुबली नामक फिल्म का इनके साथ कोई संबंध नहीं है) को मुख्यरूप से तीन बातों के लिए स्मरण किया जाता है :-

प्रथम, वे मानव इतिहास में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक थे। यहां तक कि उन्होंने अपने ही बड़े भाई के विरुद्ध युद्ध करने का निर्णय लिया, उस भाई के विरुद्ध जिसका वे अत्यन्त सम्मान करते थे। यह हर्ष का विषय है कि हमारा भारतीय संविधान हमारी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और जीवन की निजता के अधिकारों को समाविष्ट करते हुए उनका संरक्षण करता है।

दूसरे, वे प्रथम कर्मयोगी थे जिन्होंने विजय के फल को स्वेच्छा से छोड़ते हुए संसार का परित्याग किया। तीसरे, वह प्रथम ऐसे आदर्श सन्त थे जिन्होंने तपस्या के कठिनतम रूप का निर्वहन किया।

भरत-बाहुबली संघर्ष का रक्तपात-हीन समाधान इस बात का एक उपयुक्त उदाहरण है कि दैनिक जीवन और पारस्परिक सम्बन्धों में अहिंसा और अनेकान्तवाद के आदर्शों को कैसे व्यवहार में लाया जा सकता है।

क्या मंत्री-परिषद् का निर्णय वास्तव में उतना बुद्धिमत्तापूर्ण था जितना कि उस समय समझा गया? क्या दो राजाओं के बीच का कोई विवाद व्यक्तिगत द्वन्द्व युद्धों के द्वारा सुलझाया जा सकता है? भीषण नरसंहार की बात न भी करें तो दोनों सेनाओं के परस्पर युद्ध का क्या परिणाम होता? निश्चय ही, सम्राट् भरत अपनी विशाल सेना के बल पर युद्ध में विजयी होते। मानव-इतिहास में विवादों को सुलझाने की उपर्युक्त पद्धति का अनुसरण फिर कभी नहीं किया गया।

Another issue pertaining to land rights. This practice of distribution of lands to all princes was given up sooner. Only, the eldest son was given the heir. Will it help in arresting further fragmentation of our arable lands?

Shravanbelgola is famous for the visit and *samadhi* of Samrat Chandragupta Maurya as a Digambar Jain saint. He was the most famous and powerful monarch in the recent history. His kingdom was spread from Afghanistan in the west up to Burma in the east and covered most part of the modern India excepting Tamil Nadu and Odisha. There might have been some alliance with Tamil kings. At the prime age of 49, he renounced the throne at the behest of Srutkevali Bhadrabahu. Noting that Bhadrabahu was born to a Brahmin family and the close friendship with Chandragupta, one is tempted to think that he was none other than Chanakya.

The great immigration of Srutkevali Munisangh supervised by the monarch Maurya to South India was a turning point in the annals of both Jainism and Indian history. The Ajanta Ellora in Maharashtra and Badami caves in Karnataka herald this great immigration.

Chavundaraya, the commander-in-chief of Ganga dynasty was motivated to install the grand statue of Gommatesh Bahubali at Shravanbelgola in 981 A.D. It was in fact to commemorate this great migration of the munisangh of 12000 saints led by antim Srutkevali Bhadrabahu. He was ably guided by his guru, Acharyasri Nemichandra Siddhant Chakravarti. While the sculpting of the statue was progressing, he also undertook to create popular Jain scriptures

एक अन्य प्रश्न भूमिगत अधिकारों से संबन्धित है। राजा द्वारा अपनी भू-संपत्ति को सभी राजकुमारों में वितरित करने की यह पद्धति शीघ्र ही छोड़ दी गई। केवल सबसे बड़े पुत्र को राज्याधिकार सौंपा गया, क्या यह पद्धति हमारी कृषि-योग्य भूमि को और अधिक खंडों में विभाजित होने से रोकने में सहायक हो सकती है ?

श्रवणबेलगोला सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य के एक दिगम्बर जैन मुनि के रूप में वहां आने के लिए भी प्रसिद्ध है और उनकी समाधि भी वहीं है। वह हमारे निकटवर्ती इतिहास में सर्वाधिक प्रसिद्ध और शक्तिशाली सम्राट् रहे हैं। उनका साम्राज्य पश्चिम में अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में बर्मा तक फैला हुआ था और तमिल और उड़ीसा राज्यों को छोड़कर आधुनिक भारत का अधिकांश भू-भाग उनके अधिकार क्षेत्र में था। संभव है कि तमिल राजाओं के साथ भी कुछ सन्धियां की गई हों। उन्चास वर्ष की अल्पायु में सम्राट् चन्द्रगुप्त ने श्रुतकेवली भद्रबाहु की प्रेरणा से सिंहासन का परित्याग कर दिया। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि भद्रबाहु का जन्म एक ब्राह्मण – परिवार में हुआ था और उनकी चन्द्रगुप्त के साथ प्रगाढ़ मित्रता थी, ऐसा भी सोचा जा सकता है कि भद्रबाहु और कोई नहीं, चाणक्य ही थे।

सम्राट् चन्द्रगुप्त के निरीक्षण में श्रुतकेवली मुनिसंघ का दक्षिण भारत में महान् देशान्तरण भारतीय इतिहास और जैन परम्परा दोनों की एक महत्वपूर्ण निर्णायक घटना थी। महाराष्ट्र की अजन्ता-एलोरा और कर्नाटक की बादामी गुफाएं इस महान् देशान्तरवास का उद्घोष करती हैं।

गंगा-राजवंश के सेनापति चामुण्डराय द्वारा सन् 981 में श्रवणबेलगोला में गोमटेश बाहुबली की विशाल प्रतिमा की स्थापना करवाना वास्तव में अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु के नेतृत्व में 12000 मुनियों के वहाँ देशान्तरवास करने की घटना के स्मरणार्थ भी अभिप्रेरित था। चामुण्डराय का उनके गुरु आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती द्वारा उपयुक्त मार्गदर्शन किया गया। जिस समय प्रतिमा का निर्माण-कार्य चल रहा था, उन्होंने प्राकृत भाषा में अनेकानेक जैन धर्म-ग्रंथों की भी रचना करवाई जैसे – गोमटसार,

viz *Gommatasara*, *Triloksara*, *Labhdhisara* and *Dravyasangraha* in Prakrit. The story and hymns of Bahubali are available in Prakrit, Sanskrit, Tamil, Kannada, Marathi and Hindi.

The author, both the editors and publisher are religiously grateful to the revered persons like Acharyasri Vidyanand Ji Maharaj and Bhattarak Ji of Shravanbelgola for their inspired contributions. The patronage of erstwhile Maharaja of Mysore is also remembered with gratitude. The art work of Mr. Vinit Garg (mob. No. 9212790110) is also acknowledged.

1 January 2018

New Delhi

Prof. M.L. Jain

Dr. R.K. Jain

त्रिलोकसार, लब्धिसार और द्रव्यसंग्रह। बाहुबली की कहानी और उनके स्तुति-गीत प्राकृत, संस्कृत, तमिल, कन्नड़, मराठी और हिन्दी भाषाओं में उपलब्ध हैं।

इस पुस्तिका के लेखक, सम्पादक और प्रकाशक परम पूजनीय आचार्यश्री विद्यानंद जी महाराज और श्रवणबेलगोला के माननीय भट्टारक जी जैसे महात्माओं के हृदय से आभारी हैं। हम मैसूरु के भूतपूर्व महाराजा के प्रति भी उनके संरक्षण के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। कला-चित्रों के लिए श्री विनीत गर्ग धन्यवाद के पात्र हैं।

1 जनवरी, 2018

नई दिल्ली

प्रोफेसर एम० एल० जैन

डॉ० आर० के० जैन

BHAGWAN RISHABH DEV

Bhagwan Rishabh Dev, the first Tirthankar was the founder of Jainism in this cycle of time called *AvasarpiNi*. Jain chronology places him in almost immeasurable antiquity in the past. He was born at the end of the third period in the current regressive half cycle of time (*AvasarpiNi*). The legend has it that Bhagwan Rishabh became so integral to human civilization that the Hindu *PuraNas* like Bhagavat Puran, Vedas and Upanishads hail him in many praiseworthy ways. He is mentioned as an incarnation of God Vishnu in Bhagwat Puran. There is copious evidence that he was worshiped in the Indus Valley civilizations. Numerous seals of image of bulls (bull being the symbol of Rishabh) have been found and also a nude image of a male standing in standing posture (*Kayotsarga*) in Mohenjo-Daro excavations. The Vedas hail him as a long haired sage often associated with Shiva. Some images of Rishabh have been found with locks of hair hanging on the shoulders.

His father was king Nabhi, one of the patriarchs (Kulkaras) of that era and his mother was Marudevi. When Rishabh was prince, the planet earth changed its status from the land of enjoyment (*Bhog bhumī*) to that of labour (*Karma bhumī*). It meant that people had to work for their livelihood. The Prince organized the society and taught *Asi* (defence), *Krishi*, *Masi* (literature), *Vanijya* (Commerce), *Shilpa* (Crafts and engineering) and *Vidya* (Knowledge and skills) to people.

In other words, he is the one who taught all the basic skills that mankind needed. Thus, Bhagwat Acharya Jinasen in *Adipurana* virtually called him Adi Brahma. The importance of Rishabh Dev therefore lies in the fact that he created the organization of human society and was called Prajapati (Lord of Creatures), Adi Nath (First Lord) and the World Teacher. He was also the first lawgiver to the society and set up spiritual

भगवान् ऋषभदेव

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जैनधर्म के प्रथम प्रवर्तक थे। काल-निर्णय की दृष्टि से उनका सम्बन्ध प्राचीनतम युग से है। उनका जन्म वर्तमान अवसर्पिणी काल (निरन्तर ह्रास की ओर उन्मुख) के तीसरे आरा के अन्तिम भाग में हुआ था, जब जनजीवन पहले की तरह सुगम और सुविधापूर्ण नहीं रह गया था। हिन्दू भागवत् पुराण में ऋषभदेव को भगवान् विष्णु का अवतार कहा गया है। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि ऋषभदेव की सिन्धु घाटी की सभ्यताओं में पूजा की जाती थी। वृषभ यानी बैल (जो कि ऋषभदेव का प्रतीक चिह्न है) की आकृति लिए अनेकानेक मोहरें प्राप्त हुई हैं और कायोत्सर्ग मुद्रा में सीधी खड़ी एक नग्न पुरुष की आकृतियाँ भी मोहनजोदड़ो की खुदाइयों में प्राप्त हुई हैं। वेदों के स्तोत्रों में उनका उल्लेख एक लम्बे बालों वाले महर्षि के रूप में किया गया है, जिनका सम्बन्ध शिवजी से जोड़ा जाता है। ऋषभदेव की कुछ आकृतियों में उन्हें कंधों पर बिखरने वाले लम्बे बालों के साथ दिखाया गया है।

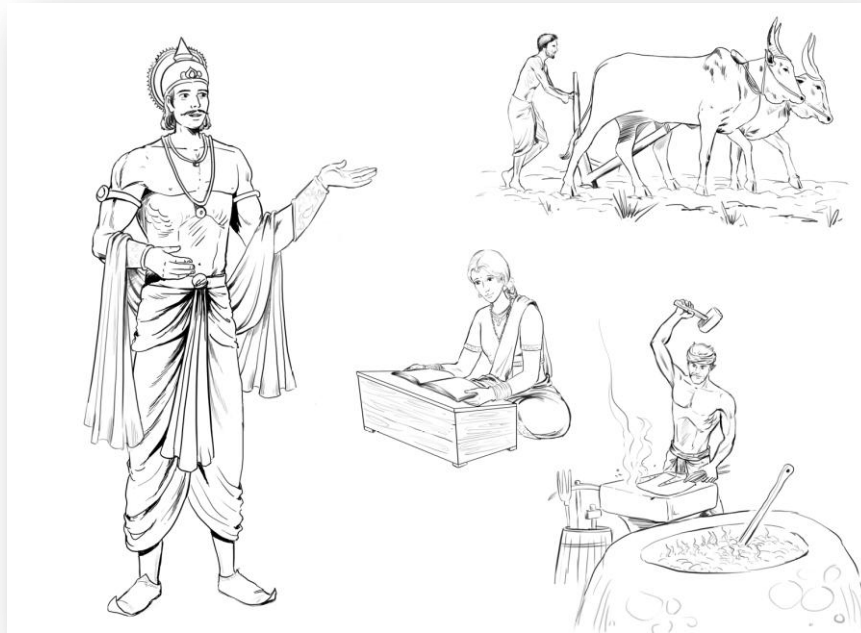
ऋषभदेव के पिता नाभिराय कुलकर थे और उनकी माता का नाम मरुदेवी था। नित नई समस्याओं से कुंठित होकर नाभिराय ने ऋषभदेव से सलाह मांगी। ऋषभदेव ने समाज को संगठित करते हुए लोगों को असि (तलवार-संचालन), कृषि (खेती), मसि (लेखन), वाणिज्य (व्यापार), शिल्प (कारीगरी) और विद्या (ज्ञान) की शिक्षा दी।

दूसरे शब्दों में, उन्होंने मानव-समाज को वे सब आधारभूत कलाएं सिखाईं जिनकी उन्हें आवश्यकता थी। इन व्यवसायों ने पृथ्वी को भोगभूमि से कर्मभूमि होने में सहायता की। इसी कारण आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण में उन्हें आदि ब्रह्मा कहा है। इस प्रकार ऋषभदेव का महत्त्व इस बात में है कि उन्होंने मानव-समाज को एक नई व्यवस्था प्रदान की

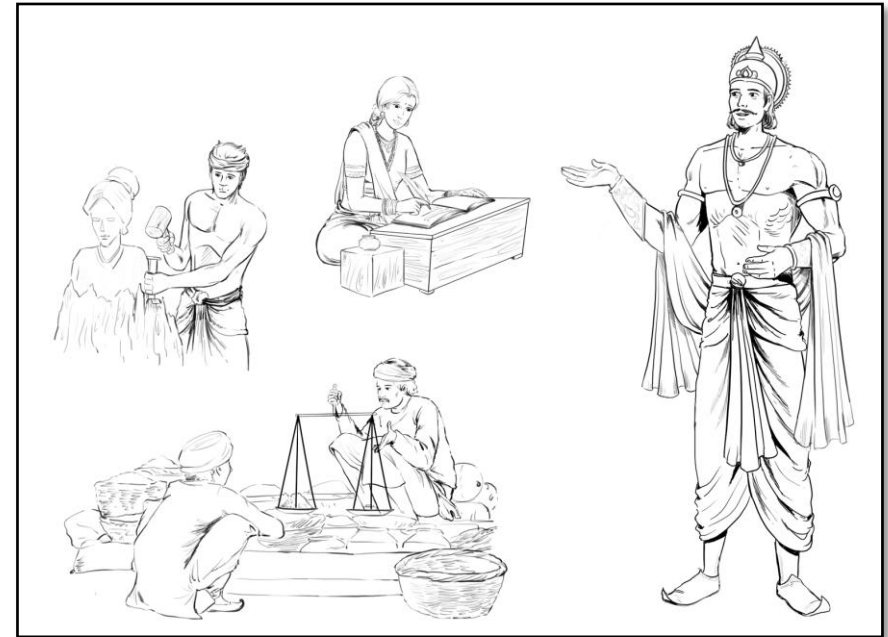
and secular laws for society and mankind. He also devised the new marriage system.

जिसके कारण उन्हें प्रजापति, आदिदेव और विश्व-शिक्षक कहा जाता है। उन्होंने समाज को कानून और न्याय-व्यवस्था के साथ-साथ एक नई विवाह-पद्धति भी प्रदान की।

राजा ऋषभदेव की शिक्षाएँ Teachings of Prince Rishabh Dev



कृषि, विद्या और शिल्प
Agriculture, Knowledge and Sculpting



असि, मसि और वाणिज्य ।
Defence, Crafts and Commerce

King Rishabh Dev, the king of Ayodhya had two queens by names, Yashasvati and Sunanda. Queen Yashasvati gave birth to Bharat and 98 sons and a daughter, the legendary Brahmi. Queen Sunanda gave birth to a son by illustrious name, Bahubali and a daughter by name Sundari. Bahubali was the most handsome and the tallest person of his times. He was known as *Kamadev*. The wonder-image of Bahubali at Shravanbelgola reminds us of his magnificent personality. If Bharat was supremely courageous, Bahubali was incomparable in valour. He taught scriptology and mathematics, respectively to his daughters, Brahmi and Sundari.

After ruling his kingdom with relish for a very long period, one day the celestial Lord Indra arranged a dance programme. It is being said that Indra wanted Rishabh Dev to renounce the world so that the primary goal of Tirthankar of establishing Dharma for the benefit of pious souls would be taken up. Accordingly, in the dance programme, he introduced an *apsara* by name Neelanjana whose lifespan was too short to complete her dance. The *apsara* disappeared in between and Indra instantly introduced another identical copy of her so that the audience could not notice the change of the dancer.

Being highly intelligent, he could notice this change which triggered in his mind a train of events leading to the dawn of *vairagya*. He decided to renounce the world. To make sure that his sons do not squabble after his departure, he distributed his kingdom among all his sons.

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव अयोध्या के राजा थे। उनकी दो रानियां थीं—यशस्विति और सुनन्दा। यशस्विति ने 99 पुत्रों और एक पुत्री को जन्म दिया, भरत उनमें सबसे बड़े थे। सुनन्दा ने एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म दिया। पुत्र का नाम बाहुबली था और वे अत्यन्त रूपवान होने के कारण मन्मथ यानी कामदेव के नाम से भी जाने जाते थे। कोई भी अन्य व्यक्ति उनसे अधिक सुन्दर नहीं माना जाता था। श्रवणबेलगोला में स्थित बाहुबली की विशाल प्रतिमा उनके महान् आकर्षक रूप की झलक मात्र है। यदि भरत अत्यन्त शूरवीर और साहसी थे तो बाहुबली का पराक्रम अतुलनीय था। राजा ऋषभदेव ने अक्षरमाला का विकास करते हुए अपनी बड़ी पुत्री ब्राह्मी को उसका ज्ञान कराया और छोटी पुत्री सुन्दरी को गणित—विद्या की शिक्षा दी।

जब ऋषभदेव को आनन्दपूर्वक राज्य करते हुए बहुत समय बीत गया, तब एक दिन देवेन्द्र ने उनकी राजसभा में एक नृत्य—कार्यक्रम का आयोजन किया। ऐसा कहा जाता है कि इन्द्र चाहते थे कि ऋषभदेव अब संसार का त्याग कर दें जिससे तीर्थंकर के प्राथमिक लक्ष्य ... पुनीत आत्माओं के कल्याण के लिए धर्म—स्थापना — की पूर्ति हो सके। तदनुसार, नृत्य कार्यक्रम में उन्होंने नीलांजना नाम की एक ऐसी अप्सरा को प्रस्तुत किया जिसकी जीवन—अवधि इतनी कम रह गई थी कि वह अपना नृत्य भी पूरा नहीं कर सकती थी। अतएव वह अप्सरा नृत्य के बीच में ही अन्तर्ध्यान हो गई और इन्द्र ने बड़ी चतुराई से उसके स्थान पर उस जैसी ही एक अन्य अप्सरा को इस तरह से प्रस्तुत किया कि दर्शक इस परिवर्तन को लक्षित नहीं कर पाए।

पर ऋषभदेव ने अत्यन्त बुद्धिमान होने के कारण तुरन्त इस परिवर्तन को पहचान लिया और नीलांजना के आकस्मिक निधन की घटना ने उनके मस्तिष्क में ऐसी प्रतिक्रियाएं उत्पन्न कीं कि उनके हृदय में संसार से वैराग्य की भावनाएं जाग्रत होने लगीं और उन्होंने निश्चय किया कि अब वे सांसारिक कार्यों को छोड़कर आत्मोन्नति के लिए तपस्या में संलग्न होंगे। उनके वन गमन के पश्चात् पुत्रों में आपसी संघर्ष न हो, इस उद्देश्य से उन्होंने अपने राज्य का विभाजन करते हुए प्रत्येक पुत्र को एक भाग प्रदान किया। अयोध्या ज्येष्ठ पुत्र भरत को सौंपी और पौदनपुर बाहुबली को।



बाँए से दाँए बाहुबली, नर्तकी नीलांजना, रानी यशस्वती, राजा ऋषभदेव,
रानी सुनन्दा, भरत

(L to R) Bahubali, Neelanjana, Queen Yashasvati, Lord
Rishabhdeva, Queen Sunanda and Bharat



नर्तकी नीलांजना के आकस्मिक निधन पर ऋषभदेव को वैराग्य उत्पन्न
हुआ और दीक्षा लेने का निर्णय लिया।

At the sudden death of the dancer, Neelanjana, a sense of
detachment dawned in Lord Rishabhdev who decided to
renounce the world

BHARAT & BAHUBALI

After some time, *Chakra-ratna* (a weapon in the form of a wheel overseen by deities) appeared in Bharat's armoury. Its importance was that Bharat would become an emperor. It also meant that he would have to conquer and take control of the whole world. Bharat embarked on a conquest and numerous empires bowed before his onslaught. Bharat returned to Ayodhya.



The Chakraratna stopped at the gate of the fort. For a Moment, Bharat was taken aback. He consulted the foreseers. "You may have conquered the whole world" they told the

भरत और बाहुबली

कुछ समय पश्चात् राजा भरत की आयुधशाला में एक चक्र—रत्न प्रकट हुआ। उसका प्रतीकार्थ यह था कि भरत अब चक्रवर्ती बनेंगे। इसका आशय यह भी था कि अब उन्हें सम्पूर्ण संसार को जीतकर अपने नियंत्रण में लेना होगा। भरत विजय—यात्रा पर निकल पड़े और अनेकानेक साम्राज्यों ने उनके आक्रमण के सामने घुटने टेक दिए।

राजा भरत की आयुधशाला में एक चक्ररत्न प्रकट हुआ जिसका प्रतीक—अर्थ यह था कि भरत को सम्पूर्ण संसार को जीतकर चक्रवर्ती बनना होगा। भरत ने बाहुबली के पास दूत भेजा कि वह उसकी सर्वोच्चता स्वीकार करें।

With birth of the Chakra- Ratna in the armoury of King Bharat, it was an indication that he would become an Emperor. He sent a messenger to Bahubali to accept his Supremacy.

जब भरत अयोध्या लौटे तो चक्ररत्न दुर्ग के मुख्यद्वार पर अचानक रुक गया। एक क्षण के लिए भरत चौंक पड़े। उन्होंने निमित्त—ज्ञानियों से इसका कारण पूछा। निमित्त—ज्ञानियों ने कहा, "आपने भले ही सम्पूर्ण

triumphant king, “but your brothers have not yet accepted your supremacy.” Bharat sent messengers with mission to “Tell them to accept me as the Emperor.” Bharat’s 98 brothers were disgusted. “Greed for empire has gripped our eldest brother. He will not allow us to rule the kingdoms that our father gave us. It’s better to abandon our regal rights and follow in father’s footsteps,” they said. All the 98 of them discarded their crowns, clothes and ornaments and performed *kesha lochana* (practice of initiation) before the devine presence of Bhagwan Rishabh.

King Bahubali however rejected this path of meek surrender. He refused to accept subordination to his elder brother as the emperor. He took to task, the messenger who conveyed Bharat’s order. “I am reigning over Paudanpura given to me by my father. Why has brother cast his eyes on it? I have no wish to hand over this land though he is my elder brother. Go and tell him that. Is he not content with his empire?” said Bahubali.

“Sir, I am only a messenger,” replied the messenger, “I know the emperor. Accept the emperor’s supremacy quietly. Bharat has the chakra (wheel) and the rod (sceptre). They are enough for him to subdue his opponents. When that is the case, you will gain both esteem and wealth if you submit to him and join his court.” Bahubali seethed with rage. “Get Out. I don’t know what I would do to you if you were not a messenger. Are you making threats and offering inducements? He ordered the messenger to be thrown out.

But the messenger did not yield. “This is all I can say

संसार जीत लिया हो पर आपके भाइयों ने अभी तक आपकी आधीनता स्वीकार नहीं की है।” भरत ने शीघ्र ही सभी भाइयों के पास दूत भेजे कि वे उसे चक्रवर्ती सम्राट् स्वीकार करें। सभी भाई यह सोचकर उसके प्रति ग्लानि से भर गए कि ‘हमारे सबसे बड़े भाई को राज्य—लिप्सा ने ग्रस लिया है। जो राज्य हमारे पिता हमको देकर गए हैं, वह हमें उन पर भी राज्य नहीं करने देगा। इससे तो यही अच्छा है कि हम अपना अधिकार छोड़कर पिताजी के चरण चिन्हों पर ही चल पड़ें।’ सभी 98 भाई केशलोचन (बालों को हाथों से तोड़ना) करते हुए ऋषभदेव जी के समवसरण में सम्मिलित होते हुए तपस्या में संलग्न हो गए।

पर बाहुबली ने इस मार्ग का अनुसरण नहीं किया। उन्होंने अपने बड़े भाई को चक्रवर्ती सम्राट् मानने से इंकार कर दिया। जो दूत भरत का संदेश लेकर उनके पास आया था, उन्होंने उससे कहा, “मैं जिस पौदनपुर पर राज्य कर रहा हूँ, यह मेरे पिता ने मुझे दिया है। मेरा भाई इसपर कुदृष्टि क्यों डाल रहा है? यद्यपि वह मेरे बड़े भाई हैं पर मेरी इस भूभाग को उन्हें देने की कोई इच्छा नहीं है। जाओ और उन्हें बता दो। क्या वह अपने राज्य से संतुष्ट नहीं हैं?”

दूत ने कहा— ‘श्रीमान्! मैं तो केवल संदेशवाहक हूँ। मैं राजा भरत को जानता हूँ। आप शान्तिपूर्वक अपने बड़े भाई की सर्वोच्चता स्वीकार कर लीजिए। भरत के पास चक्र भी है और राजदण्ड भी जो उनके लिए अपने विरोधियों को शान्त करने के लिए पर्याप्त हैं। उनकी आधीनता स्वीकार करके आप सम्मान भी प्राप्त करेंगे और वैभव भी।’ बाहुबली क्रोध से तिलमिला उठे। ‘निकल जाओ यहाँ से। यदि तुम दूत न होते तो न जाने मैं तुम्हारे साथ क्या करता? क्या तुम मुझे धमकी दे रहे हो? और प्रलोभन भी? चले जाओ।’ उन्होंने अपने सेवकों को दूत को बाहर तक छोड़कर आने की आज्ञा दी।

finally,” he said. “The King Bharat is an Emperor. Everyone should accept his sovereignty, lest he would not hesitate to tame you also. He has both the wheel and the mighty army.” Would Bahubali take this quietly? “Go. Go, I know all that,” he said. “Even the potters in my land have the wheel and rod! If Bharat’s greed and arrogance have no limits, then let there be war.” With this stalemate, the negotiations broke down.



The rival armies faced each other in the battlefield. But the wise ministers of both sides appealed to the adversaries to stop the battle. “If Tirthankara’s sons set off bloodshed, it can

पर दूत शांति से चले जाने वाला नहीं था। उसने कहा, “मैं अंत में इतना ही कह सकता हूँ कि राजा भरत चक्रवर्ती बनना चाहते हैं। सबको उनकी सार्वभौमिकता स्वीकार कर लेनी चाहिए अन्यथा वे आपको परास्त करने में संकोच नहीं करेंगे।” बाहुबली ने कहा, “जाओ-जाओ, मैं वह सब जानता हूँ। एक कुम्हार के पास भी चक्र और डंडा होता है। यदि भरत के लोभ, अहंकार और हठ की कोई सीमा नहीं है तो युद्ध हो जाने दो.....।” और इसके साथ ही वार्ता-क्रम टूट गया।

मंत्रियों द्वारा भरत और बाहुबली को सुझाव देना।

Ministers proposing a resolution to avoid bloodshed

विरोधी पक्षों की सेनाएं युद्धभूमि में आमने-सामने आ खड़ी हुई। पर दोनों पक्षों के मंत्रियों ने प्रतिपक्षियों से युद्ध रोकने की प्रार्थना की। “यदि

only be calamitous. This is a matter of prestige between you two only. Therefore, why not the two of you wage a duel? The winner can be deemed as Emperor,” they suggested.

Both the brothers very generously gave their consent. The ministers then designed three rounds of battles viz. *Drishti Yudh*, *Jal Yudh* and *Malla Yudh*. *Drishti Yudh* means constant staring at each other till one succumbs with a winking of eyes. *Jal Yudh* means flashing water at each other till one succeeds. *Malla Yudh* means wrestling.



भरत और बाहुबली के बीच द्वन्द्व युद्ध - प्रथम चरण: दृष्टि-युद्ध
Duel between Bharat and Bahubali: First Event – Gaze Combat

अहिंसा—मूर्ति तीर्थकर के पुत्रों ने रक्तपात आरम्भ किया तो इसका परिणाम भयंकर होगा। यह केवल आप दोनों के मध्य सम्मान का प्रश्न है अतएव क्यों नहीं आप दोनों के ही बीच युद्ध हो जाए? जो जीतेगा वही चक्रवर्ती माना जाएगा”.... उन्होंने सुझाव दिया।

दोनों भाइयों ने इस पर उदार मन से अपनी-अपनी सहमति प्रकट की। निर्णायकों ने द्वन्द्व युद्ध के तीन चरण प्रस्तावित किए – दृष्टियुद्ध, जलयुद्ध और मल्लयुद्ध।



द्वितीय चरण: जल-युद्ध
Second Event: Water Combat

Bahubali won first two rounds with ease and in the third round, he hoisted Bharat aloft with both hands but with respect put him down. He was overtaken by compassion and grief.

बाहुबली ने पहले दोनों संघर्ष आसानी से जीत लिए और तीसरे संघर्ष में उन्होंने बड़े भाई भरत को अपने दोनों हाथों में ऊपर उठा लिया और उन्हें पृथ्वी पर पटकने वाले ही थे कि तभी उनके मन में भाई के प्रति दया-भाव उपज आया और उन्होंने भरत को आदरपूर्वक उतारकर नीचे खड़ा कर दिया।



तृतीय चरण - मल्लयुद्ध बाहुबली का भरत को अपने दोनों हाथों में ऊपर उठाने के बाद आदरपूर्वक उन्हें नीचे उतारकर खड़ा करना।

Third Event – Wrestling: After lifting Bharat in his two hands, Bahubali respectfully placed him down

That, for Bharat, was a moment of shame. He ordered the Chakra-ratna to slay Bahubali. But Bahubali had won the duel of the brothers. The chakraratna went round Bahubali thrice and came to a halt.

Bahubali grew even more disillusioned. Greedy Bharat would not hesitate to kill his own brother for the sake of power, he felt, "We are children of such a great king but what example have we set for our subjects? Thoughts of treason? Who wants this kingdom which turns brother against brothers?" he mused and instantly, he set off for the forest. Remorse gripped Bharat too. "Who wants this empire if you depart for *tapasya*?" he cried. But Bahubali was firm and left the place to pursue renunciation.



भरत ने चक्ररत्न को बाहुबली के संहार की आज्ञा दी पर चक्ररत्न बाहुबली की प्रदक्षिणा करके, बिना उन्हें कोई क्षति पहुँचाए वापस लौट आया।

Bharat attacked Bahubali with Chakra-Ratna but it returned back after going around Bahubali with reverence

जो पाकर भी छोड़ दे उसे त्यागी कहते हैं और जो जीतकर भी स्वेच्छा से हार जाए उसे बैरागी कहते हैं।

भरत के लिए तो यह घोर अपमान का क्षण था। उन्होंने तुरन्त चक्ररत्न को बाहुबली का संहार करने की आज्ञा दी, पर बाहुबली ने द्वन्द्व-युद्ध में विजय प्राप्त की थी, फिर वे चरम-देहधारी और एक ही पिता के पुत्र थे अतएव चक्ररत्न उनके सामने निःशक्त था। चक्ररत्न ने बाहुबली की तीन प्रदक्षिणाएं कीं और फिर स्थिर हो गया।

भरत के इस आचरण को देखकर बाहुबली का मन और भी अरुचि से भर गया। उन्होंने सोचा, "सत्ता के लिए मनुष्य अपने भाई की भी हत्या करने में संकोच नहीं करेगा...." उन्होंने कहा – "हम एक महान् राजा के पुत्र हैं पर हमने अपने प्रजाजनों के लिए क्या उदाहरण स्थापित किया है? – राजद्रोह के विचार ! ऐसा राज्य किसे चाहिए जो भाई को भाइयों का शत्रु बना दे?" और ऐसा कह कर उन्होंने वन की ओर प्रस्थान किया। भरत का हृदय भी पश्चाताप से भर गया। रोते हुए ही उन्होंने कहा—"यदि तुम तपस्या के लिए चले जाओगे तो यह राज्य मुझे भी नहीं चाहिए.....।" पर बाहुबली अपने निर्णय पर स्थिर रहे और वन में तपस्या के लिए चले गए।

MAHAMUNI BAHUBALI'S SUPREME PENANCE

King Bahubali went to the forest, became a Digambar Muni and stood in still erect posture (*kayotsarg*). One year passed, he stood still even without winking for a moment. But omniscience eluded him.

The Jain scriptures prescribe diligent procedures for a Jain muni. A muni must not harm any living organism. He should not have attachment to any external entities even to a level of one atom. If challenged, he should face all hardships without violating his muni dharma. For reasons not known to us, when muni Bahubali stood in *kayotsarg*, creepers started encircling his legs, body and arms. Below his feet, termites and snakes built their mounds. Under the circumstances, the muni was compelled not to move his posture. In fact, he could not even sleep for a moment, lest his body might lean down causing harm to the creepers, ants, termites and snakes.

Unfortunately, the bitter memories of battle with his own elder brother started haunting his mind and thus disturbed his path of elevation. This delayed to a period of one year during which time, he demonstrated the exemplary and supreme level of penance. Acharya Jinsen in *AdipuraN* describes his attainment of seven extraordinary powers (*Riddhi*). Bhagwan Bahubali is remembered even today for this extraordinary par excellence *tapasya* without any violation of procedures prescribed in the scriptures. In this context, the installation of his statue by Chavundaraya assumes enormous significance. By this act, Chavundaraya could also commemorate the great art of penance as per Jain dharma.

महामुनि बाहुबली की महान् तपस्या

बाहुबली वन में जाकर कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानमग्न हो गए। पर एक वर्ष की कठोर तपस्या के बाद भी बाहुबली को केवलज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई।

जैन ग्रन्थों में जैन मुनियों के लिए अत्यन्त कठोर साधना-पद्धति का विधान किया गया है। एक मुनि को किसी भी जीव को क्षति नहीं पहुंचानी चाहिए और उसे किसी भी बाहरी उपकरण या पदार्थ से एक अणु मात्र भी अनुरक्ति नहीं होनी चाहिए। किसी चुनौती के उपस्थित होने पर उसे सभी कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने मुनि-धर्म का निर्वाह करना चाहिए। इसका कारण तो हमें ज्ञात नहीं पर जब मुनि बाहुबली कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानमग्न हो गए तो लता-पत्रों ने उनके पांवों, हाथों और शरीर को लपेट लिया। उनके पांवों के नीचे चींटियों और सर्पों ने मिट्टी के ढूह बना लिए। इन परिस्थितियों में, वे विवश हो गए कि एक पल के लिए भी सो नहीं पाए कि कहीं उनका शरीर झुक जाए और लता-पत्रों आदि को क्षति पहुंचे।

दुर्भाग्यवश, अपने बड़े भाई के साथ युद्ध की कटु स्मृतियाँ उनके मन-मस्तिष्क को व्यथित करने लगीं जिसके कारण उनके मुक्ति के मार्ग में भी बाधा उत्पन्न हुई। ऐसा एक वर्ष तक चलता रहा जिसमें उन्होंने कठोर तपस्या करने का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। श्री आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण में, इनके सप्त ऋद्धि प्राप्त होने की सूचना दी। आज भी उन्हें इस असाधारण और अनुपम तपस्या के लिए याद किया जाता है जिसमें उन्होंने शास्त्रोक्त किसी भी पद्धति का उल्लंघन नहीं किया। इस संदर्भ में, चामुण्डराय द्वारा उनकी प्रतिमा के प्रतिष्ठापन की घटना और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि ऐसा करके चामुण्डराय ने जैन शास्त्रों में वर्णित कठोर तपस्या-पद्धति के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की।

As narrated, earlier, Mahamuni Bahubali did severe penance in the 'kayotsarga' position in the forest. The enlightenment eluded him despite such rigorous uninterrupted *tapasya* for a year. During this period, Bharat was busy in his royal activities and after a year went to pay obeisance to Lord Rishabh. Not finding Muni Bahubali in the assembly, he queried about him. "He is embarrassed to be standing on the land belonging to you. Go and convince him," Adinath Rishabh advised.

Bharat and his two sisters went to Bahubali. Sundari said cryptically into his ear, "None will ride to liberation being mounted on the elephant. Get off the elephant." The elephant is the metaphor for his false ego. Bharat knelt at Bahubali's feet and said, "O Munishwar! this land is yours. I got it because you abdicated it. Please pardon me and attain the best in your mission" he pleaded. Mahatapaswi Bahubali's sense of misgiving ceased. He instantly attained enlightenment. He gained Moksha later.



**भरत का वन में तपस्या-रत बाहुबली के पास जाना
और उनके मन की भ्रान्तियाँ दूर करना।**

**Emperor Bharat went to the forest to meet
Muni Bahubali**

यह ज्ञात होने पर कि उनका छोटा भाई अभी तक अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल नहीं हुआ है, भरत अपने पिता ऋषभदेव के पास पहुंचे और उनसे इसका कारण पूछा। उन्होंने कहा, "वह इस आत्म-ग्लानि से ग्रसित है कि वह तुम्हारी भूमि पर खड़ा है....। जाओ, उसे समझाओ.....।"

भरत और उसकी बहिन बाहुबली के पास गए और बहिन ने गुप्त रूप से उनके कान में कहा— "मेरे प्रिय भाई, (अपने भ्रामक विचार के) हाथी से नीचे उतर आओ। "नतमस्तक भरत ने उनके चरणों में झुकते हुए कहा, "मेरे प्रिय भाई ! यह भूमि तुम्हारी ही है। तुमने इसका परित्याग कर दिया था, इसलिए यह मुझे मिली। अपने सब भ्रम दूर करो और ध्यानस्थ हो जाओ.....।" बाहुबली की भ्रान्तियाँ दूर हुईं। उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ और तदुपरान्त उन्होंने मोक्ष पद प्राप्त किया।

THE LAST SRUTKEVALI BHADRABAHU

He was born as a Brahmin in Pundravardhana situated in the former East Bengal and lived during 433 – 357 B.C. Considering his proximity with Chandragupta Maurya, it was likely that he was none other than the celebrated Chanakya. He was the last Shruta Kevalin (one who is thorough with Jain scriptures) and the last pontiff Head of the undivided Jainism.

He migrated with 12000 saints to Shravanbelgola to preserve the religion against the adverse famine conditions in north India. He breathed last at this place through the process of Sallekhana. His footprints can be seen in the Chandragiri, at the Shravanbelgola. The famous archaeologist Professor Radha Kumud Mukherjee has deciphered the inscriptions dated about 600 A. D., 1129 A.D., 1163 A. D. and 1432 A. D. about this divine pair.

चन्द्रगिरि में श्रुतकेवली भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मौर्य के चरण चिन्ह

The sacred footprints of SrutKevali and Samrat Chandragupta Maurya at Chandragiri

अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु

भगवान महावीर के युग के दौरान पांच श्रुतकेवलियों में स्वामी भद्रबाहु अन्तिम श्रुतकेवली थे। उनका जन्म भूतपूर्व पूर्व.बंगाल के पुण्डरवर्धन स्थान में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनकी जीवन- अवधि 433 से 357 ईस्वी पूर्व थी (आयु 76 वर्ष)। चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ उनकी निकटता को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि वे अन्य कोई नहीं, विश्वप्रसिद्ध चाणक्य ही थे। वे अन्तिम श्रुतकेवली थे (जो जैन धर्मशास्त्रों के पूर्ण ज्ञाता होते हैं) और अविभाजित जैन संप्रदाय के अन्तिम सर्वोच्च धर्म गुरु थे।

उत्तर भारत के दुर्मिक्ष के दुष्प्रभावों से धर्म को बचाने के लिए उन्होंने 12000 मुनियों को साथ लेकर श्रवणबेलगोला में देशान्तरण किया। इसी स्थान पर सल्लेखना व्रत लेते हुए उन्होंने अन्तिम सांस ली। श्रवणबेलगोला स्थित चन्द्रगिरि में उनके चरण चिन्ह देखे जा सकते हैं। पुरातत्त्व के प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर राधा कुमुद मुकर्जी ने उनके दिव्य चरण चिन्हों से संबन्धित उन प्राचीन शिलालेखों की व्याख्या की है जो सन् 600 ई., 1129 ई., 1163 ई. और 1432 ईस्वी के हैं।



THE STORY OF CHANDRAGUPTA MAURYA

The Samrat Chandragupta Maurya was the first emperor in recent history to have brought India under a single rule. Guided by his mentor, Chanakya, he could establish gold standards of governance. His kingdom was spread from Afghanistan in the north to Burma in the east and covered entire Indian subcontinent except Tamil kingdoms and Odisha.

The well known historian Professor Radha Kumud Mookerji confirms the Jain version of Chandragupta Maurya accompanying Srutakevali Bhadrabahu to southern India. The extensive caves of Ajanta and Ellora as well as Badami caves were created to accommodate the munisangh of Bhadrabahu. The historian Vincent Smith too endorsed this historical incidence. The Chandragupta Basadi contains tableau (see photo on the next page) depicting the southern India migration of munisangh of Bhadrabahu. The Greek and Latin literature phonetically refers him with the names Sandrokottos and Androcottus.

After 24 years of reign, he renounced the world at the age of 49 at the behest of his guru Bhadrabahu. He became a Jain acharya by the name of Vishakaacharya and propagated the religion in Tamil Nadu and Kerala. As a great nationalist, he had 16 dreams about the future of India and these dreams are very popular in one form or another. He practiced Sallekhana at the hill named after him. According to the famous archaeologist Mr. B. Lewis Rice, the emperor Ashok was said to have visited this place. He is credited to have named Chandragiri in honour of his grandfather.

चन्द्रगुप्त मौर्य की कहानी

सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य अर्वाचीन इतिहास में प्रथम सम्राट् थे जो भारत को एक केन्द्रीय शासन के अंतर्गत लाने में सफल हुए। अपने गुरु चाणक्य के मार्गदर्शन में वे शासन प्रबन्ध के स्वर्णिम स्तरों को स्थापित कर पाए। उनका साम्राज्य पश्चिम में अफगानिस्तान से लेकर पूर्व में बर्मा तक फैला हुआ था और तमिल एवं उड़ीसा राज्यों को छोड़कर भारतीय उपमहाद्वीप का समस्त भूभाग उनके अधिकार-क्षेत्र में था।

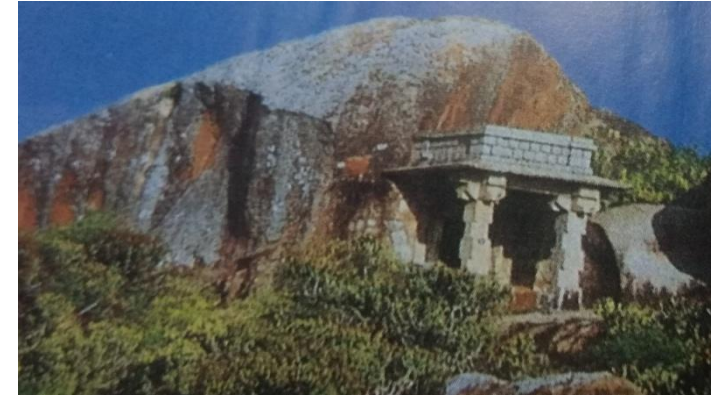
सुप्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफेसर राधा कुमुद मुकर्जी ने उस जैन विचारधारा की पुष्टि की है जिसके अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने श्रुतकेवली भद्रबाहु के संघ के साथ दक्षिण भारत में देशान्तरण किया था। अजन्ता और ऐलोरा की विस्तृत गुफाओं और कर्नाटक की बादामी गुफाओं का निर्माण भद्रबाहु मुनिसंघ के आवास के उद्देश्य से किया गया था। इतिहासकार विन्सेन्ट स्मिथ ने भी इस ऐतिहासिक घटना का अनुमोदन किया है। चन्द्रगुप्त बसदी में इस देशान्तरण को झाकियों के रूप में चित्रित किया गया है। यूनानी और लातिन साहित्य में स्वरशास्त्र के भेद के कारण उन्हें सेन्द्रोकोटोस और एन्ड्रोकोटोस कहा गया है।

चौबीस वर्ष राज्य करने के उपरान्त चन्द्रगुप्त ने 49 वर्ष की अल्पायु में अपने गुरु भद्रबाहु के कहने पर संसार का त्याग कर दिया। वे विशाखाचार्य नाम से एक जैन आचार्य बन गए तथा उन्होंने तमिल और केरल राज्यों में धर्मप्रचार का कार्य किया। एक महान् राष्ट्रवादी होने के नाते उन्होंने भारत के भविष्य के संबन्ध में 16 स्वप्न देखे जो भिन्न-2 रूपों में बहुत लोकप्रिय रहे हैं। जिस पहाड़ी पर उन्होंने सल्लेखना द्वारा शरीर त्याग किया उस पहाड़ी का नाम चन्द्रगिरि रखा गया। प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता मिस्टर बी लेविस राइस के अनुसार, ऐसी मान्यता है कि सम्राट् अशोक ने इस स्थान की यात्रा की थी और उन्होंने ही अपने पितामह (दादा) के सम्मान में इस पहाड़ी का नाम चन्द्रगिरि रखा था।



श्रुतकेवली भद्रबाहु का अपने संघ के साथ आगमन
The arrival of Shrutkevali Bhadrabahu with his sangh at
Shravanbelgola

चन्द्रगिरि पर श्रुतकेवली भद्रबाहु गुफा
The Bhadrabahu cave



सल्लेखना के दौरान श्रुतकेवली भद्रबाहु
Shrutkevali Bhadrabahu during Sallekhana



SHRAVANBELGOLA

This place is famous for the grand and marvelous statue of Bhagwan Gommatesh Bahubali. Other epithets for this place as seen in some inscriptions are Devara Belgola and Gommatapura. It is a small township located in Hassan district of Karnataka. It is about 155 kms from Bengaluru and 222 km from Mangalore. It is 12 kms away from the National Highway no. 75 near Hirisave. Chandragiri and Vindyagiri are the two famous hills at this place. Besides, it has an old mutt ably managed by the Swastisri Charukeerti Bhattarak ji. There are many old temples near the foothills.

The name Belgola was derived either from the common weed called belagulla or the wild brinjal (Botanical name: *Solanum ferox*) or the Sanskrit names viz. Śvetasarovara & Dhavalasarovara meaning white or clean pond. The prefix Shravan referring to the SamaNas was given by Samrat Ashok. The pond is mentioned by these names in the inscriptions available there.

As per the second volume of Epigraphia Carnatica, compiled by B. Lewis Rice, the place is spotted with over 800 inscriptions more so in Chandragiri dating from 600 AD to 1830 AD. A perusal of the inscriptions written in proto-Kannada and old Kannada reveal the rise of this language as well as that of the various dynasties such as Western Ganga Dynasty, the Rashtrakutas, the Hoysala, Vijayanagara and the Wodeyars Empire over a millennium. In a survey conducted by the Times of India on August 5, 2007, the statue was voted by the readers as the first of the Seven Wonders of India.

श्रवणबेलगोला

यह स्थान भगवान् गोम्मटेश बाहुबली की विशाल और विस्मयकारी प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है। इस स्थान के कुछ अन्य नाम बेलगोला और गोम्मटपुरा हैं जिनका उल्लेख कुछ शिलालेखों में हुआ है। यह कर्नाटक राज्य के हासन जिले के अंतर्गत एक छोटा-सा नगर है जो बेंगलूरु से 155 कि.मी. और मंगलौर से 222 कि.मी. है। हिरिसेवे के निकट नेशनल हाइवे (राष्ट्रीय राजमार्ग) नं. 75 से यह 12 कि.मी. दूर है। यहां चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि नामक दो प्रसिद्ध पहाड़ियाँ हैं। इसके अतिरिक्त यहां एक प्राचीन मठ है जिसका सुचारु संचालन स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक जी द्वारा किया जाता है। पहाड़ियों के आसपास के क्षेत्र में बहुत से प्राचीन मन्दिर हैं।

बेलगोला नाम या तो यहां सामान्य रूप से पाई जाने वाली घास जिसे बेलगुल्ला कहा जाता है, से व्युत्पन्न हुआ है या उस जंगली बैंगन से जिसका वनस्पति-शास्त्र का नाम 'सोलानम फारेक्स' है। यह संस्कृत नामों श्वेत सरोवर और धवल सरोवर से भी जुड़ा हो सकता है जिनका अर्थ सफेद या स्वच्छ तालाब है। 'श्रवण' नाम सम्राट् अशोक द्वारा जोड़ा गया था जो श्रमण की ओर संकेत करता है। इस सरोवर को यहां उपलब्ध शिलालेखों में इन्हीं नामों से अभिहित किया गया है।

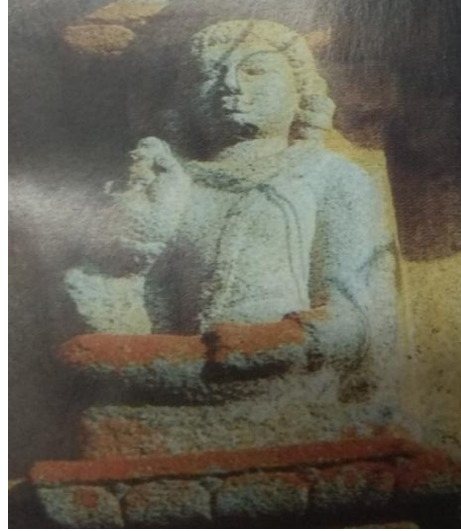
बी. लेविस राइस द्वारा सम्पादित 'एपिग्राफिया कर्नाटिका' भाग-2 के अनुसार इस स्थान पर 800 से अधिक शिलालेख पाए गए हैं जिनमें अधिकांश चन्द्रगिरि पर हैं और जिनका लेखन काल 600 ई. से 1830 तक है। आद्य और पुरानी कन्नड में लिखित इन शिलालेखों के अध्ययन से इस भाषा के विकास के साथ-साथ विभिन्न राजवंशों के उत्थान और पतन की कहानियाँ भी सामने आती हैं जैसे – पश्चिमी गंगा राजवंश, राष्ट्रकूट, होयसोला, विजयनगर और वोडेयार साम्राज्य इत्यादि। 'टाईम्स आफ इण्डिया' द्वारा 5 अगस्त 2007 में आयोजित एक सर्वेक्षण में बाहुबली की इस विशाल प्रतिमा को पाठकों द्वारा भारत के सात आश्चर्यों में प्रथम स्थान पर चुना गया था।

CHAVUNDARAYA

Chavundraya or Chamundaraya (940–989 A. D.) was the commander-in-chief of Western Ganga dynasty of Talakad which falls in Karnataka. He worked under the reigns of Marasimha II (963-975) and Rachamalla IV (975–986).

A multi-talented person and a courageous commander he was, he is now remembered more for his initiative of the construction of the grand and divine monolithic statue of Bhagwan Bahubali. His courageous exploits earned him several honorific titles such as Samara Paraśurāma, Vira Martanda, Ranarangasimha, Samara Dhurandhara, Vairikula Kaladanda, Bhuja Vikrama and Bhatamara.

Known for his religious fervour and literary skills, his works called the *Chamundaraya Purana* or *Trishasthi Salaka Purana* in Kannada and the *Chāritrasāra* in Sanskrit are wellknown. He patronised the famous savants of his time, notably the poet Ranna and has etched his name in the history of medieval Karnataka. The Chavundaraya basadi in Chandragiri bears his glorious name.



चावुण्डराय
Chavundaraya



चंद्रगिरी में उनके कन्नड़ में हस्ताक्षर
His signature in Kannada at
Chandragiri

Credits: Dineshkannambadi at Wikipedia, CC BY-SA 3.0
<https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=4367278>

चावुण्डराय

चावुण्डराय या चामुण्डराय (940–989 ई.) तलकाड के पश्चिमी गंगा राजवंश के सेनापति थे जो कर्नाटक प्रदेश में आता है। उन्होंने राजा मारासिंह द्वितीय (963–975) और राजमल्ला (975–986) के शासन काल में सेनाध्यक्ष के रूप में कार्य किया।

वह एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति और एक साहसी सेनापति थे जो आज भगवान् बाहुबली की विशाल और दिव्य प्रतिमा के निर्माण के लिए किए गए प्रयासों के लिए अधिक जाने जाते हैं। उनके साहसिक कार्यों के कारण उन्हें अनेक उपाधियों से सम्मानित किया गया जैसे समर परसुराम, वीर मार्तण्ड, रणरंगसिंह, समर धुरन्धर, वैरीकुल कालदंड, भुजा विक्रम और भटमार इत्यादि।

वह धार्मिक क्रियाकलापों के प्रति अपने उत्साह और साहित्यिक प्रतिभा के लिए भी जाने जाते हैं। कन्नड़ में उनकी रचनाएं चावुण्डराय-पुराण या त्रिषष्टीषलाका पुराण और संस्कृत में चरित्रसार सुविख्यात है। उन्होंने अपने समय के प्रसिद्ध विद्वानों को भी संरक्षण प्रदान किया जैसे कवि रन्ना। इस प्रकार कर्नाटक के मध्यकालीन इतिहास में उन्होंने अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। चन्द्रगिरि स्थित चावुण्डराय बसदी में उनका गौरवपूर्ण नाम अंकित है।

एक सपना जो सच हुआ : भगवान् बाहुबली की विशाल प्रतिमा का निर्माण The Dream that Came True: Making of the Grand Statue of Bhagwan Bahubali

Chavundaraya, his mother, Kalala Devi, his guru, Acharya Sri Nemichand Siddhanta Chakravarti and the chief sculptor, Chagad are the central figures connected with this story.

Acharya Sri Nemichandra Siddhant Chakravarti was the one who guided Chavundaraya in shaping the grand statue of Bahubali. It is said that Chavundaraya wanted both the statue and Jinvani come up in grand style. As per his wish, he has gifted an immortal book called Gommatasara which is an abridged version of *Shri Dhawala*. It is named after Chamvundaraya's childhood name, Gommata. He has also written *Dravyasangrah*, *Triloksar* and *Labhdhisar* which are all summaries of Jain philosophy. He is hailed as Siddhant Chakravarti or the emperor of Jain thoughts and philosophy. His works serve as learning resources today.

Kalaladevi, the mother of Chamvundaraya, desired to have a darshan of the statue of Lord Bahubali said to be installed by Chakravarti Bharat in Podanapura. She and her son sought the advice of Acharya Sri Nemichand Siddhanta Chakravarti ji. When all the three were travelling towards Podanapura, they halted at Shravanbelgola. In their identical dreams, they were instead asked to install a statue of Bahubali at the Vindhyagiri hills. As instructed in the dream, Chavundaraya shot an arrow towards Vindhyagri hills. The site nearby the arrow target was carefully removed to discover the hidden outline of the statue.

इस कहानी के केन्द्रीय पात्र हैं — सेनापति चामुण्डराय, उनकी माता कलाला देवी, गुरु आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती और प्रधान शिल्पी चागद।

आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती वह व्यक्ति थे जिन्होंने बाहुबली की विशाल प्रतिमा के निर्माण-कार्य में चामुण्डराय का मार्गदर्शन किया। ऐसा कहा जाता है कि चामुण्डराय चाहते थे कि प्रतिमा और जिनवाणि दोनों को अत्यन्त श्रेष्ठ ढंग से प्रस्तुत किया जाए। उनकी इच्छा के अनुरूप नेमिचन्द्र ने गोम्मटसार के रूप में एक अमर रचना प्रस्तुत की जो श्री धवल का संक्षिप्त संस्करण है। इसका नामकरण चामुण्डराय के बचपन के नाम 'गोम्मट' के आधार पर किया गया है। नेमिचन्द्र जी ने द्रव्यसंग्रह, त्रिलोकसार और लब्धिसार आदि ग्रंथों की भी रचना की है जो सम्पूर्ण जैनदर्शन का सारांश हैं। उन्हें सिद्धान्त चक्रवर्ती अथवा जैन चिन्तन और दर्शन के सम्राट् के रूप में सम्मानित किया गया है। उनकी रचनाएं आज शिक्षा के स्रोतों और संसाधनों की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

कलाला देवी, चामुण्डराय की माता ने इच्छा प्रकट की कि वह पोदनपुर में चक्रवर्ती भरत द्वारा स्थापित भगवान् बाहुबली की प्रतिमा के दर्शन करना चाहती हैं। इसके लिए उन दोनों ने आचार्य श्री नेमिचन्द्र जी से परामर्श किया। जब तीनों पोदनपुर की ओर यात्रा कर रहे थे तो वे मार्ग में श्रवणबेलगोला में रुके। उस रात तीनों को एक जैसे स्वप्न आए जिनमें उनसे विन्ध्यगिरि में ही बाहुबली की प्रतिमा की स्थापना करने के लिए कहा गया था। स्वप्न के आदेशानुसार चामुण्डराय ने विन्ध्यगिरि की ओर एक तीर चलाया। तीर पहाड़ी में जहां जाकर लगा उस स्थान को साफ करने पर प्रतिमा की छुपी हुई रूपरेखा सामने आ गई।

STORY OF SCULPTOR: CHAGAD

The colossal statue of Bahubali at Shravanbelgola was carved and chiseled out thereafter under the supervision of now famous Chavundaraya. This statue was given shape between 970 A. D. to 981 AD. It took 12 long penanceful years to complete this world marvel.

It's believed that this valuable heritage was sculpted by head sculptor by name Chagad. He was also known as Aristanemi. When Chavundaraya hired Chagad to sculpt this statue, he demanded, as his wages, gold-dust equal to the weight of stone pieces that would be removed during sculpting the statue. Chavundaraya gladly accepted this deal as he understood the value of this masterpiece. As per promise, the first wage at the end of work on the first day was paid. Chagad was ecstatic.

He took home the bagful of gold dust. As soon as he put his hand inside the bag, his hand got stuck with the gold dust causing him severe pain. The dust would not leave his palm. Chagad was in extreme pain and got very worried.

His kind mother soon realised his folly. She chided him "My dear son!, great works of spiritual art are not sold for gold. They should be worshiped and served free of cost. Look at the devotion of Chavundaraya, and his reverence for Bahubali. He is happy to give so much so easily to you. If you have any repentance, go and return the wage to him. Forgo your claims and surrender your services at the feet of Bahubali".

शिल्पकार चागत की कहानी

श्रवणबेलगोला में स्थित भगवान् बाहुबली की विशाल प्रतिमा का निर्माण सेनापति चामुण्डराय द्वारा करवाया गया था जो विश्वविख्यात विद्वान् और प्रख्यात कवि भी थे। इस मूर्ति के निर्माण में सन् 970 से 981 तक लगभग 12 वर्ष लगे।

पुरातत्त्व की इस बहुमूल्य धरोहर के निर्माण का श्रेय प्रधान शिल्पी चागद को जाता है। जब चामुण्डराय ने शिल्पकार चागद से प्रतिमा के निर्माण के संबन्ध में वार्ता की तो चागद ने पारिश्रमिक के रूप में उतनी ही स्वर्ण-धूलि की याचना की जितना प्रस्तर खण्ड वह विन्ध्यगिरि से छीलेगा। चामुण्डराय ने सहर्ष भाव से इस प्रस्ताव को स्वीकार किया, क्योंकि वह कला के मर्म को समझते थे।

संध्याकाल में तराजू के एक पलड़े में विकृत शिलाखंड थे और दूसरे पलड़े में दमकती स्वर्ण-धूलि। चागद इतना स्वर्ण पाकर हर्ष से फूला न समाया। घर पहुंचकर जैसे ही वह उस स्वर्ण को सहेजकर रखने लगा वह असमंजस में पड़ गया, क्योंकि उसके हाथ स्वर्ण से अलग नहीं हो पा रहे थे, एक-दूसरे से चिपक गए थे। वह मन ही मन व्याकुल हो उठा।

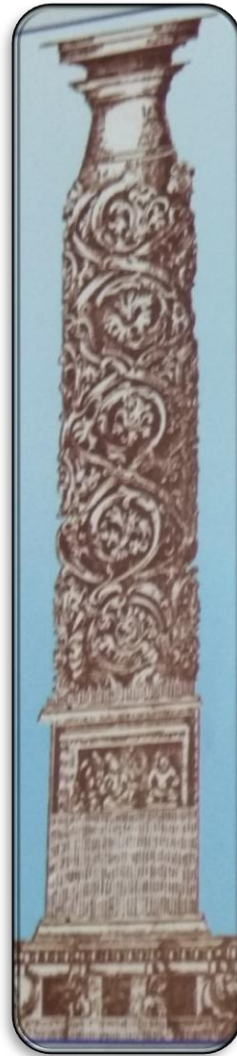
शिल्पी की माँ पुत्र की दुर्दशा देखकर बड़ी व्यथित हुई। उसने चागद को समझाया— "हे वत्स! क्या कला स्वर्ण के तुच्छ टुकड़ों पर बिका करती है ? कला तो आराधना और अर्चना की वस्तु है। उस चामुण्डराय को देख जो प्रभु-भक्ति के वशीभूत होकर तुझे इतना सब कुछ सहर्ष भाव से दे रहा है। इस स्वर्ण-राशि के मोह को छोड़ और इसे वापस करके आ। अपना शिल्प-वैभव निष्काम भाव से प्रभु के चरणों में समर्पित कर दे।"

TYAGAD BRAHMADEVA PILLAR

Chagad took a vow not to charge for his service and as soon as he took his oath, gold-dust and his hands were suddenly and miraculously separated. He returned the gold-dust to Chavundaraya. It was due to this selfless and divine feeling of service that he was named Tyagad ('Tyagad' means sacrifice in Sanskrit). It was this divine spirit of sacrifice and devotion of 12 long years which resulted in the creation of wonder statue of Lord Bahubali.

Chavundaraya erected this pillar in the mandapa in front of the statue, in honour of the selfless Chagad. It is of 7.5' in height. At one of the faces of the base, there are images of Chamundaraya and his guru Nemichandra flanked by attendants fan bearers. It has beautiful engravings and has a scroll on Chavundaraya with the following meaning:

"A sun in the shape of a jewel adorning the crest of the eastern mountains, the brahmakshara race; a moon in the shape of the splendour of his fame causing to swell the ocean, the brahmakshara race; the central gem to the pearl necklace of Lakshmi, procured from the Rohana mountain, the



त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ

चागद ने प्रतिज्ञा की कि इस मूर्ति का निर्माण मैं सेवाभाव से करूँगा और कोई पारिश्रमिक नहीं लूँगा। उसके इस संकल्प के साथ ही उसके हाथों से चिपका सोना छूट गया। उसने सारी स्वर्ण-राशि चामुण्डराय को वापस कर दी। विशुद्ध भक्ति-भावना से प्रेरित होकर चागद ने प्रतिमा का निर्माण किया। हिंदी में उसके नाम का अर्थ ही त्याग है। उसकी 12 वर्ष की सतत तपस्या और साधना ने एक ऐसी अलौकिक प्रतिमा का निर्माण किया जो युगों-युगों तक पूज्य रहेगी।

जो समय की शिला पर अद्भुत कलाकृतियों के रूप में अपनी विलक्षण प्रतिभा के अमिट चिन्ह छोड़ जाते हैं, उन महान कलाकारों की समर्पित साधना का कहना ही क्या? भगवान बाहुबली की दिव्य प्रतिमा मौन रहकर भी शताब्दियों से उन शिल्पियों की विस्मय-विमुग्धकारी कला का उद्घोष कर रही है।

चामुण्डराय ने निःस्वार्थ शिल्पी चागद के सम्मान में बाहुबली की प्रतिमा के ठीक सामने मंडप में एक स्तम्भ का निर्माण करवाया जिसकी ऊँचाई 7 फुट 5 इंच है। स्तम्भ के निम्न भाग के मुखपटल पर चामुण्डराय और उनके गुरु नेमिचन्द्र जी की आकृतियाँ अंकित हैं जो चंवरधारी सेवकों से घिरी हैं। स्तम्भ पर सुन्दर नक्काशी के साथ चामुण्डराय के विषय में एक लेख है जिसका अर्थ इस प्रकार है —

"एक सूर्य जो प्रकाश-मणि बनकर उदयाचल पर्वत के शिखरों को देदिप्यमान कर रहा है, ब्रह्माक्षर वंश; एक शरत् चन्द्र जो उनके कीर्ति-वैभव के प्रतीक रूप में सागर की लहरों को आन्दोलित करता है, ब्रह्माक्षर वंश; रोहन पर्वत से प्राप्त उत्तम नीलम मणि जो

brahmakshara race.”

In the past, the place near the pillar was used to give away charities signifying the divine role of the people connected with this pillar.

VINDHYAGIRI

The pride of the place hosting the grand statue of Bahubali is also known as Indragiri, or Peria Kalbappu or Dodda Betta. It has about 650 steps. There are 7 types of monuments – eight small and large temples, four mandapas, two ponds, five gateways, three pillars, two arches and 172 inscriptions in Kannada, Sanskrit, Marvadi Mahajani, Tamil, Manipravala and Marathi dating from the late 10th to 19th century A.D.

CHANDRAGIRI

Known as Chikka Betta (small hill) has more ancient history than Vindhyagiri. Here lay footprints of several Munis who ended their life through sallekhana. It is indeed divine with the cave of the revered Bhadrabahu and footprints of Visakhacharya who was the Samrat Chandragupta Maurya. The hill is of 200 feet high containing 92 steps. There are 14 temples called Basadi dating from 9th cent. A.D. It is smaller than Vindhyagiri by 294 feet in height. It is about 175 feet above the sea level. It has about 800 inscriptions.

लक्ष्मी के गले के बहुमूल्य मुक्ताहार का केन्द्रीय रत्न है, ब्रह्माक्षर वंश”

विगत समय में स्तम्भ के निकट का स्थान दान-कार्यों के लिए प्रयोग में लाया जाता था जो इस स्तम्भ से जुड़े व्यक्तियों की दिव्य भूमिका को प्रतिपादित करता है।

विन्ध्यगिरि

बाहुबली की भव्य प्रतिमा को धारण करने वाली गौरवशाली विन्ध्यगिरि को कुछ अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे इन्द्रगिरि, पेरिय कलबप्पू या डोडा बेट्टा। इसमें लगभग 650 सोपान हैं। यहां सात प्रकार के स्मारक हैं— आठ छोटे-बड़े मंदिर, दो तालाब, पांच द्वार मार्ग, तीन स्तम्भ, दो मेहराब और 172 शिलालेख जो कन्नड, संस्कृत, मारवाड़ी महाजनी, तमिल, मणिप्रवाल और मराठी भाषाओं में हैं। इनका रचनाकाल 10वीं से 19वीं शताब्दी है।

चन्द्रगिरि

चिक्का बेट्टा (छोटी पहाड़ी) नाम से प्रसिद्ध यह पहाड़ी विन्ध्यगिरि की तुलना में अधिक इतिहास को समेटे हुए है। यहाँ बहुत से मुनियों के चरणचिन्ह हैं जिन्होंने सल्लेखना द्वारा अपने जीवन का अंत किया। पूज्य भद्रबाहु की गुफा और विशाखाचार्य (जो पहले सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ही थे) के चरण चिह्नों के यहां होने से इसे दिव्य भी कहा जा सकता है। यह पहाड़ी 200 फुट ऊँची है जिसमें 92 सोपान हैं। यहां 14 मंदिर हैं, जिन्हें बसदी कहा जाता है, जिनका निर्माणकाल 9वीं शताब्दी से है। यह विन्ध्यगिरि से ऊँचाई में 294 फुट छोटी है। यह समुद्रतल से 175 फुट ऊपर है। इस पर लगभग 800 शिलालेख हैं।

THE IMMORTAL STORY OF GULLIKAYI AJJI

In March, 981 AD, Chavundaraya organised the first head-anointing ceremony (*Mahamastakabhishek*) of Bahubali Statue with much fanfare by Chavundaraya. He was overwhelmed with the false ego that he could supervise the installation of the grand statue for the first time in the fifth spoke of this time cycle. He felt that none could match him in the coming years. As the Mahamastakabhishek began, gallons and gallons of milk were poured by Chavundaraya over the statue but, alas, the milk was not reaching below the naval of the statue, causing commotion and anxiety. He was stunned. He then opened the abhishek to all elite class gathered over there. Everyone tried but still the pouring would not reach the feet of the statue.

With the permission of his guru, he then opened the ceremony inviting anyone and everyone to perform the abhishek. There appeared an old woman (Ajji in Kannada) in dilapidated sari holding a few drops of milk in the dried cup of the common weed called gullikayi. She requested permission but the guards and the gathering could not hold their laugh and ridicule. Chavundaraya allowed her to perform the abhishek. Lo and Behold! No sooner the milk from the Gullikayi was poured on the statue, not only the statue but whole of Vindhiyagiri hills and the surrounding lakes were covered with flowing stream of milk. He soon realised that she was none other than Goddess Khushmandini, the Yakshi of Lord Neminatha, who had come to bless the event and tame his ego. He ordered the making a replica of six feet high statue in her honour.



गुल्लिकायि वृद्धा की अमर कहानी

जब प्रतिमा का निर्माण हो गया तो उसकी प्रतिष्ठा के लिए सन् 981 ई. में प्रथम महामस्तकाभिषेक का आयोजन किया गया। हजारों मन दूध से प्रतिमा का अभिषेक किया गया पर आश्चर्य कि इतना दूध बहाने पर भी वह प्रतिमा की नाभि से नीचे नहीं पहुँच पा रहा था। सभी चिन्तित थे। तभी प्रतिष्ठाचार्य ने अपने निमित्त-ज्ञान से जाना कि कोई उपेक्षित वृद्धा श्रीफल की छोटी-सी गुल्लिका (कटोरी) में दूध लिए प्रभु के अभिषेक के लिए भक्तिपूर्वक लगातार आ रही है पर उसे स्थान नहीं मिल पा रहा है और इसलिए यह दुग्धाभिषेक पूर्ण नहीं हो पा रहा है।

ऐसी स्थिति में चामुण्डराय ने अपने गुरु से मार्गदर्शन की प्रार्थना की तथा उनका आदेश पाकर वे नंगे पाँव अज्जि (वृद्धा) के पास पहुँचे और आदरपूर्वक उसे प्रभु-प्रतिमा के पास लाकर उससे अभिषेक के लिए अनुरोध किया। जैसे ही अज्जि ने गुल्लिका भर दूध से प्रभु का भक्तिभाव से अभिषेक किया, वैसे ही वहाँ दूध की नदियाँ बह निकलीं और विन्ध्यगिरि और चन्द्रगिरि के मध्य स्थित सरोवर दूध से लबालब भर गया। तभी से उस वृद्धा का नाम गुल्लिकाज्जि पड़ गया। कहते हैं कि गुल्लिका के रूप में स्वयं कूष्माण्डिनी देवी (भगवान् नेमिनाथ की यक्षी) ही अभिषेक करने आई थीं। इस घटना से सेनापति चामुण्डराय के अंतरंग में उत्पन्न मूर्ति-निर्माण का दर्प भी दूर हो गया। उन्होंने चागद और गुल्लिकाज्जि दोनों की भक्तिभावना को चिर स्थायित्व देने के लिए प्रतिमा के पास ही छह फुट ऊँचा चागद-स्तम्भ बनवाया और गुल्लिकाज्जि की प्रतिमा का भी निर्माण करवाया।



भगवान् ऋषभदेव और जैन मुनियों के रूप में उनके सौ पुत्रों का एक दुर्लभ चित्र। यह चित्र विंध्यगिरि पहाड़ी पर बाहुबली प्रतिमा के मार्ग पर देखा जा सकता है।

A Rare Image of Lord Rishabh and His 100 Sons as Jain Munis.
This image can be seen at the Vindhyagiri hill on the way to the Bahubali statue

OTHER STATUES OF BAHUBALI

Only Parameshtis' footprints other than Tirthankaras were installed in the past. Not to mention about his extraordinary penance, Bahubali was the tallest person in this Hundavasarpini to reach salvation and this feat is very rare as stated in a commentary of Nandi Suttam, installation of his images spread during 4th century CE onwards. There are two images dated to late 6th century CE and so older than the one at Shravanbelgola, at the caves of Aihole and Badami in Bagalakote district. A bronze image belonging to 7th century CE is preserved in the Prince of Wales Museum, Mumbai. Another metal image belonging to 4th century CE is preserved in the Metropolitan Museum, New York. Following the mammoth statue of Bahubali, the inclusion of Bahubali along with prominent Tirthankaras became common as evident from the hill images in Tamil Nadu. Soon some images of Bahubali spread to north India also.

Interestingly, the digambara image of Apollo or Kouros of Archaic Greek Art of about 600 BC resembles the Jaina images. A seal of Mohanjodaro is said to depict the story of Bahubali. The Bamiyan statues that were destroyed recently reminded the halo history of Bahubali in that part of the world. In fact, the Svetambara version attributes Taxila as the kingdom of Bahubali but his kingdom was also claimed to be. Asmaka or today's vidarbha in deccan India

बाहुबली की अन्य मूर्तियाँ

अतीत काल में तीर्थकरों के अतिरिक्त केवल परमेश्वरों के चरणचिह्न स्थापित किए जाते थे। क्योंकि बाहुबली इस हुण्डावसर्पिणी काल में मोक्ष प्राप्त करने वाले सर्वप्रथम व्यक्ति थे, जिसे नन्दी सूत्र की एक टीका में एक दुर्लभ उपलब्धि बताया गया है, अतएव चौथी शताब्दी ईसापूर्व से उनकी मूर्तियों की स्थापना की परम्परा चल पड़ी। ईसापूर्व छठी शताब्दी के उत्तरार्ध की दो ऐसी मूर्तियाँ हैं जो श्रवणबेलगोला स्थित मूर्ति से बहुत पुरानी हैं। ये बागलकोट जिले में ऐड़होल और बादामी गुफाओं में स्थित हैं। सातवीं शताब्दी ई.पूर्व की एक कांस्य मूर्ति मुम्बई के प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियम में सुरक्षित है। एक अन्य धातु- प्रतिमा जो चौथी शताब्दी ई.पू. की है, न्यूयार्क के मेट्रोपालिटन म्यूजियम में सुरक्षित है। बाहुबली की विशाल प्रतिमा की स्थापना के बाद, प्रमुख तीर्थकरों की मूर्तियों के साथ बाहुबली की मूर्ति को भी सम्मिलित किया जाने लगा जैसा कि तमिलनाडु की पहाड़ियों की मूर्तियों से स्पष्ट होता है। शीघ्र ही बाहुबली की कुछ मूर्तियाँ उत्तर भारत में भी स्थापित की जाने लगीं।

यह एक रोचक तथ्य है कि आर्काइक यूनानी कला की 600 वर्ष ई.पूर्व की अपोलो या कौरस की वस्त्रहीन मूर्तियाँ जैन प्रतिमाओं से समानता रखती हैं। ऐसी मान्यता है कि मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मोहर में बाहुबली की कहानी को रूपायित किया गया है। बामियान की विराट् मूर्तियाँ, जिन्हें अभी कुछ समय पहले नष्ट कर दिया गया, संसार के उस भूभाग में बाहुबली की महान् गाथा का स्मरण कराती थीं। बाहुबली-कथा के श्वेताम्बर रूपान्तरण के अनुसार तक्षशिला बाहुबली के राज्य का अंग थी पर कुछ अन्य रूपों में दक्षिण भारत में अस्मका (आधुनिक विदर्भ प्रदेश) को उनका साम्राज्य माना गया है।

The monolithic statues measuring 20 feet or more in height in Karnataka are as follows:

Place	Installation year	Height in feet
Gommatagiri in Mysore District	12 th century CE	20
Karkala in Udupi District	1432 A.D.	42
Venur in Dakshina Kannada	1604 A.D.	35
Dharmasthala in Karnataka	1973 A.D.	39



Karkala



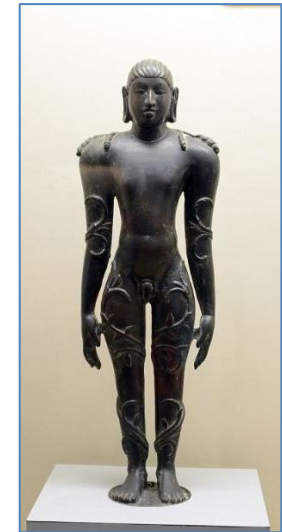
Dharmasthala



Venur



Gommatagiri



Museum of Prince Williams, UK

कर्नाटक प्रदेश में एक ही प्रस्तर (पाषाण) से निर्मित 20 फुट या उससे अधिक ऊँचाई की बाहुबली प्रतिमाएं निम्न प्रकार हैं :-

- 1 मैसूर जिले में गोम्मटगिरि पर 12वीं शताब्दी ई.पूर्व स्थापित, ऊँचाई 20 फुट।
- 2 उडीपी जिले में कर्कला स्थित, 1432 ईस्वी, 42 फुट।
- 3 दक्षिण कन्नड जिले में वेनूर, 1604 ईस्वी, 35 फुट।
- 4 दक्षिण कन्नड जिले में धर्मस्थल, 1973 ईस्वी, 39 फुट।

बाहुबली और उनकी प्रतिमा की प्रतिष्ठा से जुड़ी हुई कुछ प्रसिद्ध महिलाएं

THE FAMOUS LADIES CONNECTED WITH BAHUBALI AND HIS STATUE

1. **Brahmi:** She was the sister of Emperor Bharat and half-sister of Bahubali. She devoted her entire life developing scripts which later on became known as Brahmi scripts. Another version of this script is known as Tamil Brahmi script. We see them in archaleogical inscriptions even in Mohenjo-daro. She decided not to get married and became the head of nuns in Adinath assembly.

2. **Kalala Devi,** mother of Chavundaraya: Her perseverance led to the creation of this statue. She renounced milk for 12 years upto the successful completion of the first *Mahamastakabhishek*. She inspired the mother of the sculptor Chagad too.

3. **Dāñachintamani Atimabbey** (950-1020 A.D.) was a young but rich widow hailed as the mother of Karnataka. She was famous for her service to the propagation of *Sri Dhavala* which is a large commentary on the sacred Jain scripture called *Shatkhandagam*. Its dimension is equivalent to 72000 stanzas. She donated one gold icon engraved with the image of Shri Shantinath as a token gift for each copy of this manuscript. She seemed to have installed a large number of Jaina images according to Dr Hampa Nagarajaiah.

(1) **ब्राह्मी :** वह सम्राट् भरत की बहन और बाहुबली की सौतेली बहन थीं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लिपियों के विकास में लगा दिया जो बाद में ब्राह्मी लिपि के नाम से विख्यात हुई। इसी लिपि का एक अन्य रूपान्तर तमिल ब्राह्मी लिपि के नाम से जाना गया। पुरातत्व के शिलालेखों में हम इन्हीं लिपियों का प्रयोग देखते हैं, यहां तक कि मोहनजोदड़ो में भी। ब्राह्मी ने विवाह न करने का निश्चय किया और आदिनाथ जी के संघ में वह साधवियों की प्रमुख बन गईं।

(2) **कलालादेवी :** चामुण्डराय की माता थीं। उनके निरन्तर उद्योग के परिणाम स्वरूप बाहुबली की प्रतिमा का निर्माण हुआ। उन्होंने 12 वर्षों तक, प्रतिमा के प्रथम महामस्तकाभिषेक के सफलतापूर्वक पूरा होने तक, दूध का त्याग किया। उन्होंने शिल्पकार चागद की माता को भी प्रभावित और प्रेरित किया।

(3) **दान चिन्तामणि अतिमाब्बे (950–1020 ई.) :** एक युवा किन्तु धनी विधवा थीं जिन्हें कर्नाटक की माता के रूप में सम्मानित किया गया है। वह श्री धवला के प्रचार–प्रसार के कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं, जो कि पवित्र जैन शास्त्र ‘षट्खण्डागम्’ की विस्तृत टीका है। इसके विराट् आकार का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि इसमें 72000 श्लोक हैं। अतिमाब्बे ने इस ग्रंथ की एक प्रति के बदले में उपहार–स्वरूप एक स्वर्ण–स्मारिका भेंट की थी जिस पर शान्ति नाथ जी की आकृति अंकित थी। डॉ. हम्पा नागराजैया के अनुसार इन्होंने विभिन्न स्थानों पर अनेकानेक जैन प्रतिमाओं की स्थापना करवाई थी।

VARIOUS VERSIONS OF BAHUBALI STORY

According to Acharya Jinasena in Mahapurana, Bahubali took a vow of one year fasting. Before departing to renunciation, he took leave of Bharat and apologized for his revolt and subsequent conflict. Bharat reaches him after completion of one year penance of Bahubali. The Paumacharyam of Vimalsuri of Svetambar sect endorses this version.

It is Acharya Kundkond, in his Bhava Pahud attributing the ego of Bahubali delaying his omniscience. This theory has been elaborated by the Kannada Kavi Boppana (1180 AD). The Svetambara Hemchandra's version differs in some ways. The account of Bharat being accompanied by his two sisters finds a mention in this version. Interestingly, the sisters use a metaphor to allude to the ego of Bahubali. They seemed to have suggested getting off the elephant for achieving salvation. Some images in the Tamil Nadu hills do contain the presence of both the sisters along with Bahubali.

GOMMATA AND OTHER NAMES OF BAHUBALI

Bhagwan Bhaubali is known as Gommata, as it means handsome in Konkani language and it derived from the Prakrit word for Kamadev. Bahubali was the first Kamadeva and therefore this epithet fits him well. He is known by other names such as Gommetashwara, Bhujabali, Dorbali and Kukuteshwara. Gommata. In the latter period, the Lord Muruga was fashioned after Bahubali. Interestingly, Swami Muruga is also the younger son of Lord Shiva who is said to be derived from Lord Adinath.

भ. बाहुबली की कहानी के विभिन्न रूप

महापुराण में आचार्य जिनसेन के अनुसार बाहुबली ने एक वर्ष तक उपवास रखने की प्रतिज्ञा ली थी। संसार त्यागने से पहले उन्होंने राजा भरत से विदा ली और अपने विद्रोह और तदुपरान्त संघर्ष के लिए क्षमायाचना की। बाहुबली की तपस्या का एक वर्ष पूरा होने पर भरत वहां पहुंचते हैं। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के श्री विमल सूरी द्वारा रचित 'पउमचरयम' इसी रूप का अनुमोदन करता है।

यह आचार्य कुन्दकुन्द हैं जो अपने 'भाव पाहुड' में बाहुबली के अहंकार को उनके मोक्षमार्ग में बाधक दिखाते हैं। कन्नड़ कवि बोप्पन्ना (1180 ई०) ने इस विचार की व्याख्या की है। श्वेताम्बर आचार्यश्री हेमचन्द्र का वर्णन इससे कुछ भिन्न है। भरत का अपनी दो बहनों के साथ वहां जाने का उल्लेख इस वर्णन में है। बहनें बाहुबली के अहंकार के प्रति संकेत करने के लिए अपने कथन में एक रूपक का प्रयोग करती हैं। उन्होंने बाहुबली को मोक्ष पाने के लिए अहंकार के हाथी से नीचे उतर आने का सुझाव दिया। तमिलनाडु की पहाड़ियों में अंकित कुछ झांकियों में तपस्या—रत बाहुबली के साथ दोनों बहनों को भी उपस्थित दर्शाया गया है।

गोम्मट और बाहुबली के अन्य नाम

भगवान् बाहुबली गोम्मट नाम से भी जाने जाते हैं। कोंकणी भाषा में इसका अर्थ 'अत्यन्त सुन्दर' होता है। यह प्राकृत भाषा में कामदेव के लिए प्रयुक्त शब्द से उत्पन्न हुआ है। बाहुबली प्रथम कामदेव थे अतएव यह विशेषण उनके लिए पूर्णतः संगत प्रतीत होता है। वे कुछ अन्य नामों से भी अभिहित किए जाते हैं जैसे—गोम्मटेश्वर, भुजबली, दोरबली और कुकुटेश्वर गोम्मट। बाद में आने वाले समय में स्वामी मुरुगा को बाहुबली के अनुरूप सुसज्जित किया गया। यह एक रोचक साम्य है कि स्वामी मुरुगा भी भगवान् शिवजी के छोटे पुत्र हैं और शिवजी तथा आदिनाथ जी अभिन्न कहे जाते हैं।

LESSONS FROM BHARAT-BAHUBALI STORY

- 1) Bahubali was the first person to revolt against oppression of freedom even against his own elder brother.
- 2) After winning the battle, he renounced the fruits of victory much before the advent of Karmayoga.
- 3) Bahubali became the living example of performing perfect penance as prescribed in Jain scriptures.
- 4) The defeat at the hands of Bahubali awakened Bharat against greed and worldly attachment. It is not king Janak but his predecessor Bharat who sowed the practice of *Rajrishi*.
- 5) The story of Bharat-Bahubali possibly influenced Lord Krishna to devise the peaceful exit of Lord Arishtanemi who took to renunciation without any revolt.
- 6) The devotion of Chamundraya to his most religious mother Kalala Devi, to his religion and to his Gurus has been brought out elegantly.
- 7) The reform of this sculptor is also a story illustrating the glory of selfless service to religion.
- 8) The episode of Gullikaya Aji tamed the ego of Chavundaraya. It helped in opening the *Abhishek* ceremony to all public and the statue being dedicated to the entire humanity.

भरत और बाहुबली की कहानी से शिक्षाएँ

1. बाहुबली प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने स्वाधीनता के दमन के विरुद्ध विद्रोह किया चाहे वह अपने ही भाई के विरुद्ध क्यों न हो।
2. द्वन्द्व युद्ध में जीतने के बाद उन्होंने अपनी विजय के फल को स्वेच्छा से त्याग दिया, निष्काम कर्म योग का सिद्धान्त बहुत बाद में आया।
3. बाहुबली ने जैन शास्त्रों में प्रतिपादित तपस्या और प्रायश्चित्त का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत किया।
4. बाहुबली के हाथों पराजित होने के परिणाम स्वरूप राजा भरत के हृदय में लोभ और सांसारिक पदार्थों के प्रति अनासक्ति का भाव जाग्रत हुआ। राजर्षि की परम्परा का बीजारोपण महाराजा जनक से नहीं बल्कि उनके पूर्ववर्ती राजा भरत से हुआ।
5. भरत और बाहुबली की कहानी ने सम्भवतः भगवान् कृष्ण को भी प्रभावित किया जिसके फलस्वरूप भगवान् अरिष्टनेमि ने बिना किसी विद्रोह के त्याग और तपस्या का मार्ग अपनाया।
6. चामुण्डराय का अपने धर्म, अपने गुरु और अपनी धर्मपरायण माँ के प्रति समर्पण का भाव सुचारु रूप से सामने आया है।
7. शिल्पी चागद ने 12 वर्षों के कठोर परिश्रम से इस भव्य प्रतिमा का निर्माण किया। उसका निःस्वार्थ भाव से कला-साधना करना भी त्याग का एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है।
8. गुल्लिकायी अज्जि के वृत्तान्त ने भी चामुण्डराय और उसके उत्तराधिकारियों की आँखें खोलीं जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने इस अनुपम कलाकृति को अखिल मानवता के प्रति समर्पित किया।

RESOURCES (संदर्भ ग्रन्थ सूची)

Prakrit/Sanskrit/Hindi

1. Acharya Hemachandra (1089-1173 A. D.) *Trisastisalakapurushacaritra*, Johnson's transl. bk. 1, ch. V, pp 308-326.
2. Acharya Jinasena [8th century CE], *Adi PuraNa*: Bhartiya Jnanapitha, 1951, Parvas 36: 200-220
3. Acharya Kunthusagar (2016). *Sravanbelgol ka itihās aur Arsha Parampara*. Sri Kunthu Vidya Shodh Sansthan, Kolhapur, 123p.
4. Acharya Nemichandra Siddhant Chakravarti, *Gommatsar, Karma Khand*
5. Acharya Puspendanta, *Mahapurana*, Sandhi XVIII, Vol I, pp. 295-305: Manakchand Digambara Jaina Granthamala, Bombay, 1937.
6. Jain, Surendranath, Shripal Ji (1953). *Chitramay Sravanbelgola tatha dakshin ke anya jain Tirth*. Revised Edition, 2006. (SDJMI) Management Committee, Sravanabelgola, 73p.
7. *Gommatesvara Bahubali – Chitrakatha*, 2nd Edition, 1994 Bahubali Prakashan, Lalkothi, Jaipur, 33 p.
8. Gommatesvara Bhagwan Shri Bahubali Swami Mahamastakabhishek Mahotsava 2006 Panchkalyanak Samiti, Shravana Belgola. *Mangal Kalyanak Kalashotsava*, 2006.
9. *Gommatesvara Sahasatabdi Mahotsava Darshan*, 1981. Sravanabelgola Digambar Jain Mujrai Institutions (SDJMI) Management Committee, Sravanabelgola, 381 p.
10. Punyakushalgani, *Bharat Bahubali Mahakavyam* translated by Muni Dulharaj, Jain Vishwabharti, Ladnun, 1974: 540 p.
11. Shettar, S. (1981). *Sravan Belgol*, Dept. of Tourism, Government of Karnataka, 72p.

12. Shubhsheelgani, *Bharadeshwar Bahubali Vrutti*. Devachandra Lalbhai Pushtak no. 77, 1932, I: 376 p, II: 398 p.

13. Svayambhudeva, *Paumacariya*, vol 1, sandhi 4. Singhi Jain Sastra Shikshapith, Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay, 1953.

English

14. Boppana Pandita, *Inscriptions at Sravana Belgola* (Revised Edition, Bangalore, 1923), Epigraphia Carnatica II, pp. 97-100.
15. Dandavati, P. (2006). *Gommat: Mahamastakabhishek 2006*, The Commissioner, Dept. of Communication, Government of Karnataka, 80p.
16. Jain Journal Special Edition on Bahubali, Vol 15 No. 4, 1981.
17. Jain, Surendranath, Shripal Ji and Jain Sarojini Surendranath, 2005. *Bahubali of Jainbadri (Shravanbelgola) and Other Jain Shrines of Deccan*. 2nd Revised Edition, 2005, S. DJ. M.I Management Committee, Sravanabelgola, 63 p.
18. Nagarajaiah, H. (2001). *Opulent Chandragiri*, S. DJ. M.I Management Committee, Sravanabelgola, 2nd Edition, 2006. 68 p.
19. Sangave, Vilas Adinath (1981), *The Sacred Shravanbelgola (A Socio-Religious Study)* (1st ed.), Bharatiya Jnanpith

Tamil

20. TOI Amozhi Devar (9th century CE), Soolamani, An old Kavya. Stanza: 551-560.
21. Mallinath Jain Shastri (1980). *Sramana Beligulam*. 86p.

Kannada

22. Pancabana, *Bujabalicarita*.
23. Anantakavi, *Gommatesvaracarita*.
24. Devacandra, *Rajavalikathe*

HYMNS ON BHAGWAN BAHUBALI (by Acharyasri Jinsen in AdipuraN)

श्री बाहुबली स्तोत्रम् (आचार्यश्री जिनसेन विरचित् आदिपुराण से)

He won three battles against the mighty Bharat witnessed by a vast assembly of kings. He then renounced all including the fruits of victory as a dry grass. He was the forerunner among all those in the last body of liberation. Such was the greatness of Lord Bahubali. May he protect us all!

The much acclaimed goddess of wheel (chakra) deserted Bharat and took shelter under him without any shy or shame. But he ignored her too but took to the path of his father Lord Adinath. Such was His loftiness. May Dorbali protect us all!

He renounced the attachment with the goddess of royal wealth but wedded the goddess of victory by performing radiating penance to the dismay of many great kings. His fame is too vast to be accommodated within three worlds. He was none other than the Adi Brahma Lord Rishabh's star son, Bhagwan Bahubali. May the Supreme Father and Son protect us all!

सकलनृपसमाजे, दृष्टिमल्लाम्बुयुधै-
विजितभरतकीर्तिं, यः प्रवब्राज मुक्त्यै ।
तृणमिव विगणय्य, प्राज्यसाम्राज्यभारं,
चरमतनुधराणामग्रणीः सोऽवताद्वः ॥ 1 ॥

भरतविजयलक्ष्मीर्जाज्वलच्चक्रमूर्त्या,
यमिनमभिसरन्ती क्षत्रियाणां समक्षं ।
चिरतरमवधूतापत्रापापात्रमासी-
दधिगत गुरुमार्गः सोऽवताद् दोर्बली वः ॥ 2 ॥

स जयति जयलक्ष्मी, सङ्गमाशामवन्ध्यां,
विदधदधिकधामा सन्निधौ पार्थिवानाम् ।
सकलजगदगार व्याप्तकीर्तिस्तपस्या
मभजत यशसे यः सूनुराद्यस्य धातुः ॥ 3 ॥

1. आपने संपूर्ण नृप समूह के समक्ष शक्तिशाली भरत के विरुद्ध तीन लड़ाईयाँ जीतीं। फिर आपने सूखे घास के समान अपनी सांसारिक और शाही संपत्ति के साथ साथ जीत के फलों को भी त्याग दिया। आप उन सभी चरम शरीरियों में अग्रणी थे। आप भगवान् बाहुबली हम सब की रक्षा करें।

2. अत्यधिक प्रशंसित दिव्य चक्ररत्न ने भरत को छोड़कर आप की शरण ली। लेकिन आपने उस विजयलक्ष्मी को भी लज्जितकर अपने पिता भगवान् आदिनाथ के मार्ग अपनाया। ऐसी है आपकी महिमा! आप भगवान् दोरबली हम सब की रक्षा करें।

3 - जिन्होंने सब तरफ से अनुसरण करने वाली लक्ष्मी को छोड़कर राजाओं की निकटता में और जयलक्ष्मी के संगम की आशा को सफल करते हुए अधिक तेज को धारण किया था। सम्पूर्ण जगत् रूपी घर में व्याप्त है कीर्ति जिनकी ऐसे यशस्वी और जिन्होंने यश के लिए तपस्या को स्वीकार किया था। वे आदि ब्रह्मा के पुत्र बाहुबली स्वामी जयवंत हो।

With this expansive shoulders, he could mesmerize the mighty kings who were witness to his wrestling against the emperor Bharat. He is remembered along with most powerful and divine Bharat even today. His name spells purity to all beings. May the sacred name of Bahubali be victorious!

The downpour of poison of the serpent became harmless on His feet. The overgrowing creepers were covering His face but the sporting women of Vidyadhar clan were clearing them regularly. He is worshipped by all. May Bahubali Lord protect us!

The moment he discarded the wheel-gem from his right hand, Bahubali should have attained omniscience through penance. But his ego held him back for a prolonged period. True, even a tiny ego can harm a lot! (*Atmānushāsanam* 217)

Valiant Sage! Even after renouncing his body and such attachments, how long did Sage Bahubali stand in penance having afflicted with ego? (*Bhāva Pahud* 44)

जयति भुजबलीशो बाहुवीर्यं स यस्य,
प्रथितमभवदग्रे क्षत्रियाणां नियुद्धे ।
भरतनृपतिनाऽमा यस्य नामाक्षराणि,
स्मृतिपथमुपयान्ति प्राणिवृन्दं पुनन्ति ॥ 4 ॥

जयति भुजगवक्त्रोद् वान्तनिर्यद्गराग्निः
प्रशममसकृदापत् प्राप्य पादौ यदीयौ ।
सकलभुवनमान्यः खेचरस्त्रीकराग्रोद्
ग्रथितविततवीरुद्वेष्टितो दोर्बलीशः ॥ 5 ॥

4 - जिनकी भुजाओं का बल क्षत्रियों के समक्ष मल्ल युद्ध में प्रसिद्ध हुआ था और जिनका नाम सकल चक्रवर्ती भरत के नाम के साथ लोगों के स्मृति पटल पर आ जाता था । तथा जो प्राणी समूह को पवित्र करते हैं वे बाहुबली स्वामी जयवंत हो ।

5 - सर्प के मुख से उगले तथा निकलती हुए विष रूपी अग्नि जिनके चरणों को प्राप्त कर अनेक बार उपशान्ति को प्राप्त हुई थी और जो सम्पूर्ण जगत में पूज्य है । विधाधरों की स्त्रियों के हाथ से हटाई गई फैली हुई लताओं से जो व्याप्त है । वे बाहुबली जयवंत हो ।

OTHER QUOTES ON BAHUBALI

चक्रं विहाय निज दक्षिण बाहुसंस्थं
यत्प्राव्रजन्ननु तथैव स तेन मुञ्चेत् ।
क्लेशं तमाप किल बाहुबली चिराय
मानो मनागपि हन्ति महन्ति करोति ॥
(*आत्मानुशासनम्* 217)

देहादिचत्तसंगो मानकसायेन कलुषिओ धीर ।
अत्तावणेण जादो बाहुबली कित्तियं कालं ॥
(*भाव पाहुड* 44)

जिस क्षण बाहुबली ने अपनी दाहिने भुजा के ऊपर स्थित चक्ररत्न को त्याग दिया तपस्या के माध्यम से उन्हें सर्वज्ञता उसी समय प्राप्त होनी चाहिए थी। लेकिन उन्होंने चिरकाल तक क्लेश को अपनाये रक्खा। इससे प्रतीत होता है कि एक छोटासा अहंकार भी बहुत भारी नुकसान कर सकता है ।

धीर मुनिवर्! देहादि सबकुछ त्यागने के बावजूद बाहुबली जी अपने मान कषाय से कलुषित होकर कितने काल तक आतापन-योग में स्थित रहे थे ?

HOW TO REACH SHRAVANBELGOLA? श्रवणबेलगोला कैसे पहुंचे?

Distance from Shravanbelgola

Hassan: 52 km
Mysore: 85 km
 Bengaluru : 155 km
 Mangalore: 230 km

Nearest Airport:
 Bengaluru

Nearest Railhead:
 Shravanbelgola



By car (Route map) from Bengaluru

Bengaluru - Nelamangala - Kunigal - Yadivur - Bellur cross - take diversion from Hirisave on Bangalore - Mangalore National Highway.

Road: State Transport (KSRTC) operates regular bus service

श्रवणबेलगोला से दूरी

हसन: 52 किमी
 मैसूर: 85 किमी
 बेंगलुरु: 155 किमी
 मेंगलोर: 230 किमी

निकटतम हवाई अड्डा:
 बेंगलुरु

निकटतम रेलवे स्टेशन:
 श्रवणबेलगोला

Trains from Yeshwantpur Jn (Bengaluru) to Shravanbelgola

यशवंतपुर जंक्शन (बेंगलुरु) से श्रवणबेलगोला तक की ट्रेन

Train No. & Name	Departure Time	Days of service	Arrival at Shravanbelgola
16575 Gomateshwara Express	07:10 hrs	Sun, Tue, Thu	09:29 hrs
16515 Yesvantpur - Mangalore Express	07:10 hrs	Mon, Wed, Fri	09:29 hrs
56215 Sharavanabelagola Mysore Passenger	12:45 hrs	All days	15:13 hrs
22679 SVDK Premium Express	18:15 hrs	All days	20:21 hrs